04 - सांड को पूंछ से पकड़ने का पर्यावरणीय पाखंड

05 - खुद को 'बेकार' कहने वाले प्रोफेसर से कुछ तो सीखिए

A Daily News Magazine

भोपाल

मंगलवार, 28 मई, 2024

06- मतगणना स्थल पर 200 मीटर के दायरे में धारा 144 : कलेक्टर

07- गीतों की महफिल

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 260 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

डैमेज-कंट्रोल मोड में हैं या विरोधाभासों का प्रतीक हैं मोदी ?

माधवन नारायणन

यदि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सत्ता में रहने की एक दशक की कहानी को एक फिल्म की तरह लिखा जाए, तो उनके दिलचस्प व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को दर्शाने वाले फिल्म में तीन वर्जन हो सकते हैं। पहले वर्जन में, उन्होंने अपने आकर्षक नारे- 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के साथ भारत के युवा अल्पसंख्यक मुसलमानों के लिए अपने दृष्टिकोण को सामने रखा। सत्ता में अपने पहले पांच साल के कार्यकाल के अंत में उन्होंने मुसलमानों से कहा था, 'मैं चाहता हूं कि आपके पास एक तरफ कुरान हो और दूसरी तरफ कंप्यूटर हो।'

दूसरे स्क्रिनप्ले में मोदी को नकारात्मक ढंग से मुसलमानों पर निशाना साधते हुए दिखाया जा सकता है। प्रधानमंत्री के रूप में अपने दूसरे कार्यकाल के अंत में, मोदी ने मुसलमानों के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संदर्भ के साथ इतने सारे चुनावी भाषण दिए हैं कि उन सबके पीछे एक खास तौर-तरीके को नजरअंदाज करना मुश्किल है। उन्होंने मुगल- मीट खाने वालों पर निशाना साधा, जो अक्सर मुसलमानों या उनकी संस्कृति को रूढ़िवादी हिंदू धर्म या इतिहास से अलग दर्शाता है। मोदी ने बार-बार कहा कि कांग्रेस पार्टी का चुनावी घोषणापत्र उनको स्वतंत्रता-पूर्व भारत में मुस्लिम लीग के एजेंडे की याद दिलाता है।

एक अन्य भाषण में, उन्होंने कहा कि कांग्रेस हिंदू पिछड़ी जातियों से आरक्षण छीनकर मुसलमानों को दे देगी। एक भाषण में, उन्होंने कहा कि कांग्रेस हिंदू महिलाओं से मंगलसूत्र छीनकर मुसलमानों के बीच बांट देगी। दूसरे में, उन्होंने कहा कि कांग्रेस धन छीन लेगी और इसे घुसपैठियों और 'जिनके कई बच्चे हैं' उनको दे देगी। मोदी के भाषण को कवर करने वाले पत्रकारों ने बताया कि वह मुसलमानों को निशाना बना रहे थे। इस बात को मोदी ने नकार दिया है और यह इस फिल्म में मोदी का तीसरा, ग्रे वर्जन होगा।

इस आखिरी वर्जन को उनके निर्वाचन क्षेत्र, पवित्र शहर वाराणसी में बहती गंगा की बैकग्राउंड में फिल्माया गया है। इसमें मोदी ने दावा किया कि उनका वह मतलब नहीं था, जो उनकी बातों से निकाला जा रहा है। उन्होंने कहा कि मैं जिस दिन हिंदू - मुसलमान करूंगा, मैं सार्वजनिक जीवन में रहने योग्य नहीं रहूंगा।

वास्तव में, देखने पर ऐसा लगता है मानो मोदी 18 साल बाद आनुपातिक रूप से उस गलती का बदला ले रहे थे, जो डॉ. मनमोहन सिंह ने 2006 में की थी जब उन्होंने एक भाषण में अपने शब्दों में अनुसूचित जाति, जनजातीय लोगों और मुस्लिम अल्पसंख्यकों के संदर्भों को एक साथ जोड़ दिया था। इस भाषण का जो जैसा चाहता वैसा मतलब निकाल सकता था। स्पष्ट है कि मोदी कांग्रेस पार्टी के उन दावों का काउंटर कर रहे हैं कि बीजेपी भारत के संविधान में आमूल-चूल परिवर्तन करना चाहती है। इसके जवाब में मोदी का दावा है कि विपक्षी दल धर्मों के बीच समानता के सिद्धांत को नष्ट करना चाहता है। सूक्ष्म तथ्य यह है कि संविधान 'अन्य पिछड़ा वर्ग' (ओबीसी) के लिए कोटा प्रदान करता है और इसमें मुस्लिम समुदाय के वर्ग भी शामिल हैं। हालांकि आमतौर पर यह गलत समझा जाता है कि C का अर्थ 'जातियां/ कास्ट' है, न कि 'वर्ग/क्लास।'

कांग्रेस और बीजेपी, दोनों ही इस पर जोर देते हुए स्पष्ट नहीं करते हैं, जिससे गलत व्याख्या और राजनीतिक छींटाकशी की गुंजाइश बनी रहती है। यह अक्सर बदसूरत कट्टरता का खतरा पैदा करती है। मोदी कांग्रेस की कमजोरी का फायदा उठाते हैं, जो यह स्पष्ट नहीं करती है कि वह केवल वंचित मुसलमानों को ओबीसी के एक छोटे उप-वर्ग के रूप में मानती है। सवाल बड़े हैं। क्या मोदी विरोधाभासों का पुलिंदा हैं? या क्या वह विवादास्पद चुनावी भाषणों से पिछले तीन हफ्तों में उभरी आलोचना को लेकर डैमेज-कंट्रोल मोड में हैं? या मोदी ऐसे कट्टरपंथी हैं, जो मुसलमानों को निशाना बनाने वाले भाषणों के माध्यम से भारतीयों का ध्रुवीकरण कर रहे हैं?

इसका जवाब इस बात पर निर्भर करता है कि आप किससे बात कर रहे हैं। हमें मोदी के बयानों को समझने के लिए उससे जुड़े सभी सवालों को उसके उचित संदर्भ में जांचने की आवश्यकता है।

सोशल और डिजिटल मीडिया में बीजेपी समर्थक और उसके दक्षिणपंथी सहयोगी स्पष्ट रूप से मुसलमानों या उनकी धार्मिक प्रथाओं और बहुत कुछ को निशाना बनाते हैं। बीजेपी खुद दंगा भड़काने वालों को चुनाव टिकट देती है, जो मुस्लिम समुदाय के ऐतिहासिक जुड़ावों या समकालीन नेताओं को निशाना बनाने के लिए आक्षेप, संकेत और इससे भी बदतर तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। देश के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य, उत्तर प्रदेश में पार्टी की सरकार है और उसके एक भी विधायक मुस्लिम समुदाय से नहीं है। लगातार भाषणों में, बीजेपी नेता कांग्रेस पार्टी द्वारा मुस्लिम 'तुष्टिकरण' पर निशाना साधते हैं, जिसे समकालीन सामाजिक न्याय शब्दावली में 'समावेश' या 'सकारात्मक कार्रवाई' की नीति के रूप में देखा जाएगा।

क्या भारत में एक ऐसा प्रधानमंत्री और सत्तारूढ़ दल है, जो एक ऐसे धार्मिक समुदाय को दरकिनार कर देता है, जिसकी आबादी पिछली जनगणना के आंकड़ों के आधार पर कुल आबादी का 14 प्रतिशत है? बीजेपी का कहना है कि वह भारतीयों को धार्मिक आधार पर विभाजित नहीं करती है। भले ही वह विकासात्मक नीतियों में जाति या लिंग के आधार पर पिछड़ेपन को स्वीकार करती है लेकिन यह मुसलमानों के बीच वंचितों को पहचानने से इनकार करती है। इसे ही एनालिस्ट ध्रुवीकरण की राजनीति कहते हैं।

यह उदारवादी विचारकों और बहुलवाद/प्लूरलिज्म की शपथ लेने वाले पश्चिमी लोकतंत्रों के राजनयिकों को चिंतित करता है, लेकिन बीजेपी का एक ही जवाब होता है- 'जिनको बुरा लगेगा वो मायने नहीं रखते हैं, जो लोग मायने रखते हैं, उन्हें बुरा नहीं लगेगा।' मोदी का वैचारिक दांव भी एक चुनावी दांव है, जो हिंदी पट्टी में कच्ची धार्मिक भावना और बहुलवादी आदर्शों के बीच अलगाव पर खेला जाता है।

विपक्ष बिखरा हुआ है और अक्सर अल्पसंख्यकों की रक्षा करते समय मुसीबत में पड़ जाता है - और बीजेपी के आक्रामक प्रचारकों के पिच पर खेलता है। इससे एक सवाल उठता है- क्या इससे मोदी को एक वैश्विक नेता के रूप में नुकसान नहीं होगा जो वसुधैव कुटुम्बकम् के नारे के साथ वैश्विक शिखर सम्मेलनों में भाग लेते हैं?

इसका निंदनीय उत्तर यह होगा कि ऐसी दुनिया में जहां अमेरिका गाजा में नागरिकों पर बमबारी करने वाले इजरायल का समर्थन करता है और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की सेना यूक्रेन में नागरिक इमारतों को निशाना बनाती है, वहां नैतिक अधिकार के मामले में किसी भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा की गई कुछ दोहरी बातें शायद ही मायने रखती हैं।

(द क्विंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

प्रियंका गांधी बोलीं-

आपदा में मोदी एक बार भी हिमाचल नहीं आए

शिमला (एजेंसी)। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी ने सोमवार को हिमाचल प्रदेश में 2 जनसभाएं की। पहली जनसभा चंबा में और दूसरी शाहपुर में की। इस दौरान उन्होंने पीएम नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि मोदी कहते हैं कि

हिमाचल मेरा दूसरा घर है, लेकिन वह यहां आपदा में एक बार नहीं आए। मोदी ने धनबल से हिमाचल सरकार को गिराने की कोशिश की।

उन्होंने कहा कि जो प्रधानमंत्री इस तरह की साजिश करे। ऐसी भ्रष्ट साजिश करने वालों के मन में हिमाचल के प्रति आदर नहीं हो सकता। ऐसे लोगों का मकसद किसी भी हालत में सत्ता को अपने हाथों में रखना है।

अडानी तय कर रहे कि सेब का दाम क्या होगा- उन्होंने कहा कि हिमाचल में आज सारे कोल्ड स्टोर किसके हैं, ये सभी अडानी के हैं। अडानी तय कर रहे कि सेब का दाम क्या होगा।

पश्चिम बंगाल में चक्रवात 'रैमल' ने मचाया कोहराम

● छह की मौत, पेड़-खंभे उखड़े, दो लाख लोगों ने ली राहत शिविरों में शरण ● कोलकाता एयरपोर्ट पर 21 घंटे बाद उड़ानें शुरू

कोलकाता (एजेंसी)। खतरनाक चक्रवाती तूफान रेमल रविवार रात 8.30 बजे पश्चिम बंगाल के कैनिंग और बांग्लादेश के मोंगला में 135 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से आया। लैंडफॉल 4 घंटे तक चला। इस दौरान तटीय इलाकों उत्तर और दक्षिण 24 परगना, पूर्वी मेदिनीपुर, दीघा, काकद्वीप, जयनगर, कोलकाता, हुगली और हावड़ा में 60 किमी की रफ्तार से हवाएं चली और बारिश हुई। तूफान से पश्चिम बंगाल के दक्षिणी तटीय इलाकों के 24 ब्लॉक और 79 वार्ड प्रभावित हुए। इन इलाकों के 15 हजार घरों को नुकसान हुआ है। राजधानी कोलकाता में 100 से ज्यादा पेड़ और बिजली के खंभे उखड़ गए। सड़कों पर पानी भर गया। अभी तक 6 लोगों की मौत की खबर थी। दो लाख लोगों ने राहत शिविरों में शरण ले रखी थी।

कोलकाता के सुभाष चंद्र बोस एयरपोर्ट पर 21 घंटे बाद फ्लाइट सर्विस दोबारा शुरू हो गई है। तूफान से पहले रविवार को इसे बंद किया गया था। 394 फ्लाइट्स कैंसिल हुई थीं। बांग्लादेश में भी तूफान का जबरदस्त असर है। ढाका के सोमोय टीवी के मुताबिक, बांग्लादेश में तूफान के कारण 7 लोगों की मौत हो गई। सरकार ने 1.5 करोड़ लोगों के घरों की बिजली काट दी है। मौसम विभाग के मुताबिक, गंभीर चक्रवाती तूफान 'रेमल' सोमवार सुबह कमजोर होकर एक चक्रवाती तूफान में बदल गया है।

सुप्रभात

मैं जीवन की आग
बनना चाहता हूँ

मैं सबके प्राणों का
राग बनना चाहता हूँ

मैं ऊसर भूमि में
नदी बन बहना
चाहता हूँ

मैं हर आंगन के
पेड़ की डाली पर
झूलना चाहता हूँ

मैं रोज रोज
जीवन का उत्सव
मनाना चाहता हूँ

मैं हर घर की दीवार पर
प्रेम के अक्षर
लिखना चाहता हूँ ।

-दुर्गाप्रसाद झाला

पूरे उत्तर भारत में गर्मी का कहर

● पाकिस्तान बॉर्डर पर बीएसएफ जवान की लू से मौत ● 6 राज्यों में हीटवेव का रेड, 3 में यलो अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। सोमवार को नौतपा का तीसरा दिन था। बीते 3 दिन में राजस्थान के फलोदी में तापमान सबसे ज्यादा दर्ज किया गया। नौतपा के पहले दिन यहां तापमान 50 डिग्री, जबकि दूसरे दिन 51 डिग्री रहा। जम्मू में भी तापमान 42 डिग्री और हिमाचल के ऊना में 44.4 डिग्री तक पहुंच गया।

सोमवार को जैसलमेर में भारत-पाक सीमा पर तैनात बीएसएफ जवान की लू लगने से मौत हो गई। अजमेर के केकड़ी में भी 80 साल के बुजुर्ग ने दम तोड़ दिया। राजस्थान में 4 दिन में गर्मी से मरने वालों की संख्या 27 हो चुकी है। बिहार में भी नगालैंड के जवान की हीट स्ट्रोक से मौत हुई है। रविवार को पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में 37 जगहों का तापमान 45 डिग्री या उससे ज्यादा दर्ज किया गया। एक दिन पहले यानी शनिवार को देश में सिर्फ 17 जगहों का तापमान 45 डिग्री या उससे ज्यादा था। मौसम विभाग ने अगले दो दिन के लिए राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, उत्तर प्रदेश में भीषण हीटवेव का रेड अलर्ट जारी किया है। जबकि मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात में अलग-अलग इलाकों में हीटवेव का यलो अलर्ट जारी किया है।

गर्मी को लेकर एडवाइजरी जारी- असम डीजीपी ने लोगों से अपील की- अपने घर के पास तैनात पुलिसवालों को पानी ऑफर करें। जरूरत पड़ने पर उनकी बोतलों को रीफिल करने में मदद करें।

फलोदी देश का सबसे गर्म शहर, तापमान 51डिग्री

सिग्नल पर राहत

एमपी ट्रैफिक पुलिस ने इंदौर के चौराहों पर रेड लाइट का ड्यूरेशन कम कर दिया, ताकि लोगों को धूप में कम रुकना पड़े। आगरा, भोपाल, जोधपुर, लखनऊ समेत कई शहरों में चौराहे पर टेंट लगाए गए हैं, ताकि सिग्नल के इंतजार में उन्हें राहत मिल सके।

अमित शाह बोले-

आतंकियों और पत्थरबाजों के परिवार को जम्मू-कश्मीर में सरकारी नौकरी नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि जम्मू-कश्मीर में किसी भी आतंकवादी के परिवार के सदस्य या पत्थरबाजों के करीबी रिश्तेदारों को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी।

मीडिया से बातचीत में शाह ने कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार ने न केवल आतंकवादियों को निशाना बनाया है बल्कि आतंकियों के इको सिस्टम भी खत्म कर दिया है। इसी कारण देश में आतंकवादी घटनाओं में भारी गिरावट आई है। शाह ने कहा कि हमने निर्णय लिया है कि यदि कोई आतंकवादी संगठन में शामिल होता है, तो उसके परिवार के सदस्यों को कोई सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। शाह ने कहा कि इसी तरह अगर कोई पत्थरबाजी करेगा तो उसके परिवार के सदस्यों को भी सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। उन्होंने कहा कि कुछ मानवाधिकार कार्यकर्ता फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट गए लेकिन अंत में सरकार की जीत हुई। हालांकि, गृह मंत्री ने कहा कि अगर किसी परिवार का कोई व्यक्ति आगे आता है और अधिकारियों को सूचित करता है कि उसका करीबी रिश्तेदार आतंकवादी संगठन में शामिल हो गया है तो सरकार उस मामले में विचार करेगी। उन्होंने कहा कि ऐसे परिवारों को राहत दी जाएगी।

दिल्ली सीएम के पीए की जमानत याचिका खारिज

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्वाति मालीवाल से मारपीट केस में सोमवार को केजरीवाल के पीए बिभव कुमार की जमानत याचिका पर तीस हजारी कोर्ट में सुनवाई हुई। बिभव ने 25 मई को कोर्ट में याचिका लगाई थी। सुनवाई के दौरान स्वाति भी कोर्ट में मौजूद रहीं। सीएम के पीएम की जमानत याचिका खारिज हो गई है। बिभव के वकील हरिहरन ने सुनवाई के दौरान आरोप लगाया कि जब सेंसेटिव बॉडी पार्ट्स पर चोट के निशान नहीं मिले तो गैर इरादतन हत्या की कोशिश का सवाल ही नहीं है। न ही बिभव का स्वाति को निर्वस्त्र करने का कोई इरादा था। ये चोटें खुद को पहुंचाई जा सकती हैं। बिभव के वकील ने यह भी कहा कि पुराने जमाने में ऐसे आरोप कौरवों पर लगे थे, जिन्होंने द्रौपदी का चीरहरण किया था। स्वाति ने यह एफआईआर पूरी प्लानिंग करके 3 दिन बाद दर्ज कराई है। ये दलीलें सुनकर स्वाति कोर्ट रूम में ही रो पड़ीं। स्वाति ने बताया कि बिभव कोई आम आदमी नहीं है, वह मंत्रियों को मिलने वाली सुविधाएं इस्तेमाल करता है। उसे जमानत मिली तो मुझे खतरा होगा।

पार्टी की अच्छाई-बुराई देखने की जरूरत है: डॉ. मोहन यादव

दुश्मन देश में हो या विदेश में वह दुश्मन ही होता है : सीएम यादव

बिहार। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को बिहार प्रवास के दौरान पाटलीपुत्र लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी श्री रामकृपाल यादव के समर्थन में मानेर, पटना साहिब लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी श्री रविशंकर प्रसाद के समर्थन में काला दिनारा एवं बख्तियारपुर के टेका बीघा मैदान में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि देश की आजादी के बाद राजा, महाराजाओं ने अपनी-अपनी रियासतें छोड़ी। देश में लोकतंत्र की मांग उठी, लेकिन उसके बाद एक-एक परिवार ने अपनी सत्ता पकड़ ली और घर में ही सरकार बना ली। कांग्रेस में एक परिवार की पांच पीढ़ियां प्रधानमंत्री बनी, अब राहुल गांधी सफाई से झूठ बोल रहे, बाकी साथ दे रहे हैं। ''सबका साथ-सबका विकास और सबका विश्वास'' सिर्फ बोलने के लिए नहीं, करके दिखाने के लिए है और ऐसा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने करके दिखाया है। इंडी गठबंधन के लोग सनातन संस्कृति का अपमान करते हैं और सनातन धर्म की तुलना कोरोना वायरस, मलेरिया और डेंगू से करते हैं। ऐसी पार्टियों की अच्छाई-बुराई देखने की जरूरत है। दुश्मन देश में हो या विदेश में वह दुश्मन ही होता है। इस अवसर पर लोजपा (रा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चिराग पासवान भी उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री स्व. श्री सुशील कुमार मोदी के निवास पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि भी अर्पित की।

70 वर्षों में दूर नहीं कर पाए गरीबी, अब कह रहे हैं दूर करेंगे- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस में एक ही परिवार की पांच पीढ़ियां प्रधानमंत्री बनीं। अब राहुल गांधी भी सफाई से झूठ बोल रहे हैं और बाकी साथ दे रहे हैं। वे कह रहे हैं कि हमारी सरकार बनाओ हम खटाखट गरीबी दूर कर देंगे। कांग्रेस के एक ही परिवार की पांच पीढ़ियों ने वर्षों तक सरकार चलाई, लेकिन उनसे गरीबी दूर नहीं हुई। अब राहुल गांधी कहते हैं गरीबी दूर कर देंगे, जनता सब जानती है मूर्ख नहीं बनेगी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 45 °c | न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 28 मई 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

नक्सलियों की धमकी के बाद वैद्यराज मांझी लौटाएंगे पद्मश्री

- कहा-इलाज भी कर देंगे बंद; 11 करोड़ खाने की बात गलत

नारायणपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के पद्मश्री वैद्यराज हेमचंद्र मांझी ने सम्मान लौटाने का फैसला किया है। नक्सलियों ने उन पर निको माइंस में दलाली करने का आरोप लगाकर जान से मारने की धमकी दी है। इसके अलावा नक्सलियों ने नारायणपुर में दो मोबाइल टावर में भी आग लगा दी है। हालांकि इसके बाद गृह विभाग ने बाय कैटेगरी की सुरक्षा देने का आदेश दिया है। मामला छोटे डोंगर थाना क्षेत्र का है। जानकारी के मुताबिक, ग्राम गौरदंड और चमेली गांव में रात करीब 12 बजे बीएसएनएल के टावरों में नक्सलियों ने आग

लगा दी है। वहीं पर नक्सली बैनर और पोस्टर फेंककर गए हैं। इस पर पद्मश्री मांझी को देश से मार भगाने की बात कही है। इससे पहले नक्सली उनके भतीजे कोमल मांझी की भी हत्या कर चुके हैं। पद्मश्री मांझी नक्सिलयों के डर के चलते करीब 6 माह से गांव छोड़कर शहर में रह रहे हैं। नक्सलियों से जान के खतरे को देखते हुए पुलिस प्रशासन ने वैद्यराज को जिला मुख्यालय स्थित सेफ हाउस में सुरक्षा दी है। उन्होंने कहा है कि वह लोगों का इलाज भी बंद कर देंगे। जनअदालत लगाकर पूछताछ करते, फिर भले मार देते हेमचंद मांझी ने कहा कि, लाल पर्चे में धमकी दी है कि हमने पैसे खाए हैं, तो हम लोग एक पैसा भी नहीं खाए हैं। उन्होंने कहा कि, जनअदालत लगाकर मुझे मीडिया के साथ बुलाते और आमने-सामने बिठाकर पूछताछ करते, फिर भले मार देते। जिसने आरोप लगाया है कि 11 करोड़ लिए हैं, उसे सामने बिठाते। मांझी ने कहा कि, बार-बार पर्चा फेंककर धमकी देना ये बेइज्जती जैसा करना ठीक नहीं है। हम लोग खुद कमाकर खाने वाले लोग हैं। अभी भी हमारे यहां 20-22 लोग काम करते हैं। हमारी सुरक्षा के लिए प्रशासन ने 3-4 गार्ड दिया है। मेरे छोटे डोंगर के मकान को बना दें, सुरक्षा दें, मैं वहीं जाकर रहूंगा। उन्होंने कहा कि, सरकार कुछ नहीं करेगी तो सम्मान रखकर क्या करूंगा, उसे वापस कर दूंगा। जनसेवा करता हूं, किसी का पैसा नहीं खाते हैं। गरीब लोग जाते हैं, तो उन्हें जड़ी-बूटी देते हैं। उसे भी देना छोड़ देंगे।

जब 'अमेरिकी तोता' बनकर कान्स पहुंची गाजियाबाद की ये हसीना

रेड कार्पेट पर चमक देख उड़े सबके होश

नई दिल्ली (एजेंसी)। हर साल की तरह इस साल भी कान्स फिल्म फेस्टिवल में देसी-विदेशी सितारों ने अपने स्टाइल से जलवा बिखेरा। यहां बॉलीवुड सितारों के साथ ही कई कंटेंट क्रिएटर भी अपने अंदाज से लाइमलाइट बटोरने में सफल रहे हैं। एक ओर जहां उत्तर प्रदेश की नैंसी त्यागी कान्स पहुंचीं, तो हरियाणा की फैशन डिजाइनर निमिषा ने भी अपना डेब्यू किया था। इस सबके बीच अब गाजियाबाद की कृतिका जैन चर्चा में आई हैं, जिन्होंने भी कान्स तक का सफर तय कर जिले का नाम रोशन किया। मिसेज इंडिया वर्ल्डवाइड की फाइनलिस्ट और इंफ्लुएंसर कृतिका भी पहली बार ही दुनिया के इस सबसे बड़े फिल्म फेस्टिवल का हिस्सा बनी थीं। यहां चमचमाती मल्टीकलर गाउन में वह 'अमेरिकी तोता' बनकर कमाल की लगीं।

अमेरिकन पैरेट है ड्रेस की थीम- कृतिका ने लेबल निमिषा की ड्रेस को अपनी पहली कान्स अपीयरेंस के लिए चुना था। जिसे अमेरिकन पैरेट थीम को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया था। इस कस्टम मेड सेक्विन फर वाले गाउन में चिड़िया के पंखों से ट्रेल बनाई गई थी, तो गाउन को शिमरी टच दिया गया था। हसीना ने रेड कार्पेट पर इसे शानदार तरीके से कैरी किया है।

ऐसा है आउटफिट

कृतिका के इस प्लंजिंग नेकलाइन वाले गाउन को स्लीवलेस बनाया गया है। ये शिमरी सेक्विन गाउन है। जिसमें पिंक, ग्रीन, रेड और ऑरेंज कलर के शेड्स दिए गए हैं। अपर पोर्शन को चोली की तरह बनाकर वेस्ट से ही इसमें फ्लेयर्स डालकर फ्लोर टच बनाया गया है। वहीं, नेकलाइन पर भी पंख वाली डीटेलिंग है। इसके साथ चिड़िया के अलग-अलग कलर के पंखों से दोनों शोल्डर से साइड ट्रेल बनाई गई है। जिस पर लगे ये पंख अमेरिकन पैरेट थीम को कॉम्प्लिमेंट कर रहे हैं।

मिनिमल जूलरी की कैरी

कृतिका का ये आउटफिट काफी रंग-बिरंगा होने के साथ ही ब्लिंग वाला भी है। ऐसे में इस पर उन्होंने जूलरी कम ही रखी। अगर वह ज्यादा जूलरी स्टाइल करती, तो ये लुक ओवर द टॉप हो जाता। उन्होंने मल्टी कलर स्टोन से सजे तोते या मोर स्टाइल जैसे ईयररिंग्स पहने हैं, जो आउटफिट के रंगों से मैच हो रहे हैं। वहीं, हाथ में उन्होंने बस रिंग और गोल्ड का कंगन स्टाइल ब्रेसलेट पहना है।

ऑन पॉइंट रहा मेकअप

अपने इस लुक को परफेक्ट बनाने के लिए कृतिका ने मेकअप को ज्यादा बोल्ड नहीं किया। उनके विंग्ड आईलाइनर के साथ पिंक लिप्स अच्छे लग रहे थे। वहीं, अपने बालों को उन्होंने साइड पार्टीशन करके हल्के फ्लिक्स निकाले और फिर थोड़ा पफ क्रिएट कर उन्हें पीछे की ओर खुला छोड़ दिया। जिनमें कर्ल्स हो रखे थे।

नासा ने खोजा इंसानों के रहने लायक नया ग्रह, धरती पर बढ़ती आबादी की टेंशन खत्म!

वॉशिंगटन (एजेंसी)। वैज्ञानिकों ने नासा के नासा के अंतरिक्ष दूरबीन का उपयोग करके एक आकर्षक दुनिया की खोज की है। यह पृथ्वी के आकार के बराबर है, हमारे सौर मंडल के काफी करीब है। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि इस ग्रह पर जीवन की संभावना हो सकती है। इस नए संभावित ग्रह को ग्लिसे 12 बी के नाम से जाना जाता है, जो वैज्ञानिकों की भाषा में एक्स्ट्रासोलर ग्रह या एक्सोप्लैनेट है। ग्लिसे 12 बी एक छोटे और ठंडे लाल बौने तारे की परिक्रमा करता है जो पृथ्वी से लगभग 40 प्रकाश वर्ष दूर मीन राशि में स्थित है।

ग्लिसे 12 बी में 12.8 दिन जितना एक साल- ग्लिसे 12 बी एक्सोप्लैनेट की खोज नासा के ट्रांजिटिंग एक्सोप्लेनेट सर्वे सैटेलाइट (टीईएसएस) के जरिए की गई है। इस एक्सोप्लैनेट की चौड़ाई पृथ्वी से लगभग 1.1 गुना होने का अनुमान है। यह चौड़ाई इस एक्सोप्लैनेट को हमारे ग्रह के साथ-साथ शुक्र के समान बनाता है, जिसे पृथ्वी की जुड़वा बहन कहा जाता है। ग्लिसे 12 बी अपने तारे, ग्लिसे 12 की इतनी करीब से परिक्रमा करता है कि उसका वर्ष केवल 12.8 पृथ्वी दिनों तक रहता है। हालाँकि, क्योंकि लाल बौना ग्लिसे 12 सूर्य के आकार का लगभग एक चौथाई है, यह हमारे तारे की तुलना में बहुत ठंडा भी है।

ग्लिसे 12 बी पर जीवन जैसा वातावरण- इसका मतलब यह है कि, भले ही ग्लिसे 12 बी अपने लाल बौने तारे से सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी के केवल 7 प्रतिशत के बराबर दूरी पर है, फिर भी यह अपने ग्रह प्रणाली के रहने योग्य क्षेत्र में है। इस क्षेत्र को गोल्डीलॉक्स ज़ोन के रूप में भी जाना जाता है। यह रहने योग्य क्षेत्र एक तारे के आसपास का क्षेत्र है जो ग्रहों के लिए तरल पानी की मेजबानी करने के लिए न तो बहुत गर्म है और न ही बहुत ठंडा है। हालांकि, महत्वपूर्ण बात यह है कि ग्लिसे 12 बी की खोज के पीछे की दो टीमें अभी तक निश्चित रूप से नहीं कह सकती हैं कि क्या इसका माहौल है। इसलिए यह अस्पष्ट है कि क्या दुनिया रहने योग्य हो सकती है, लेकिन शोधकर्ताओं के पास कुछ सतर्क आशावाद है।

वैज्ञानिकों ने ग्लिसे 12 बी को कैसे खोजा

वैज्ञानिकों ने ग्लिसे 12 बी को अपने मूल लाल बौने तारे को पार करते हुए, या पारगमन करते हुए देखा। इन पारगमनों के कारण प्रकाश में छोटी-छोटी गिरावट आती है जिसे पहचानने में टीईएसएस माहिर है। पैलेथोरपे ने कहा कि, जब टीम इस परियोजना में गई, तो उन्हें निश्चित रूप से नहीं पता था कि ग्रह की कक्षीय अवधि या आकार क्या होगा। उन्होंने आगे कहा, इसका आकार पृथ्वी के समान होना एक सुखद आश्चर्य था। तो इसे देखने में सक्षम होना वास्तव में एक अच्छी बात थी, लेकिन मुझे लगता है कि विशेष रूप से यह जानना कि, रहने योग्य स्थिति के मामले में, यह पृथ्वी और शुक्र के बीच स्थित हो सकता है, वास्तव में रोमांचक है।

ग्लिसे 12 बी का तापमा 42डिग्री सेल्सियस

ग्लिसे 12 बी शुक्र को सूर्य से मिलने वाले विकिरण का लगभग 85 प्रतिशत प्राप्त करता है, लेकिन माना जाता है कि शुक्र की सतह के तापमान 867 डिग्री फ़ारेनहाइट (464 डिग्री सेल्सियस) की तुलना में इसकी सतह का तापमान 107 डिग्री फ़ारेनहाइट (42 डिग्री सेल्सियस) है। यद्यपि पृथ्वी और शुक्र दोनों सूर्य के रहने योग्य क्षेत्र में हैं, लेकिन एक में जीवन संभव है और अनुकूल वातावरण है, जबकि दूसरा एक दुर्गम नरक है जहां तापमान इतना गर्म है कि सीसा पिघल सकता है। ग्लिसे 12 बी का अध्ययन करने से हमें यह समझने में मदद मिल सकती है कि ऐसा क्यों है।

पुणे पोर्श केस : नाबालिग के पिता ने डॉक्टरों से ब्लड सैंपल बदलवाया

- शराब की बात छिपाने के लिए घूस दी, सैंपल डस्टबिन में फिंकवाया

पुणे(एजेंसी)। पुणे पोर्श एक्सीडेंट केस में सोमवार (27 मई) सुबह क्राइम ब्रांच ने दो डॉक्टर्स समेत तीन को गिरफ्तार किया। पुलिस ने बताया कि अरेस्ट किए गए ससून जनरल हॉस्पिटल के फोरेंसिक डिपार्टमेंट के हेड डॉ. अजय तावरे और डॉ. श्रीहरि हैलनोर पर नाबालिग आरोपी का ब्लड सैंपल बदलने का आरोप है। तीसरे आरोपी का नाम अतुल घटकांबले है। उस पर आरोप है कि उसने डॉक्टरों की मदद की।

पुलिस कमिश्नर अमितेश कुमार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि नाबालिग आरोपी के पिता विशाल अग्रवाल ने डॉक्टरों को ब्लड सैंपल बदलने के लिए घूस दी थी। डॉक्टरों ने ओरिजिनल ब्लड सैंपल डस्टबिन में फेंककर किसी अन्य शख्स का सैंपल लेकर रिपोर्ट बनाई, जिससे नाबालिग के नशे में होने की बात छिपाई जा सके।

दुनिया के विश्लेषकों का भी दावा

पीएम मोदी शानदार प्रदर्शन के साथ जीतेंगे चुनाव, भारत की सर्वोच्चता रखेंगे बरकरार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत भर में मतदाताओं ने चल रहे भारतीय संसदीय चुनावों के छठे चरण में अपना मतदान किया। इस बीच लगभग 90 प्रतिशत

निर्वाचन क्षेत्रों में वोट भारतीय लोगों द्वारा डाले जा चुके हैं, जबकि चुनाव का 7वां चरण 1 जून 2024 को होगा, जहां लगभग 10 प्रतिशत निर्वाचन क्षेत्रों में वोट डाले जाएंगे। इन चुनावों में सीटों की कुल संख्या 543 निर्वाचन क्षेत्र हैं। भारतीय चुनावों के आधिकारिक नतीजे 4 जून 2024 को प्रकाशित किए जाएंगे, लेकिन देश-विदेश के समाचार विश्लेषकों और राजनीतिक विद्वानों ने दावा किया है कि भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी शानदार प्रदर्शन के साथ चुनाव जीतेंगे और इस तरह भारत की क्षेत्रीय सर्वोच्चता बरकरार रहेगी। दुनिया भर के विश्लेषकों व अधिकांश मीडिया आउटलेट्स ने दावा किया है कि नरेंद्र मोदी एक और जीत की ओर बढ़ रहे हैं। मतदाताओं ने पहले ही अपना जनादेश दे दिया है। अभी केवल आधिकारिक नतीजे और घोषणा सामने आना बाकी है।

नरेंद्र मोदी सादा और संयमित जीवन जीने की अपनी विशेषताओं के लिए जाने जाते हैं। उसका कोई परिवार नहीं है, कोई संतान नहीं है। उनके खिलाफ भ्रष्टाचार का कोई आरोप नहीं है। नरेंद्र मोदी की प्रोफ़ाइल के ये उज्ज्वल पहलू नरेंद्र मोदी की राजनीतिक छवि को उजागर करते हैं और उन्हें आने वाले दिनों में भारत का नेतृत्व करने और भारत को एक प्रमुख क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए मतदाताओं के सामने एक अधिक स्वीकार्य व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

राजकोट हादसे पर हाईकोर्ट बोला- अफसरों की आंखें बंद थीं,या फिर सो रहे हैं?

गेम जोन बिना परमिशन चल रहे, यह बात 28 मौतों के बाद पता चली

राजकोट (एजेंसी)। राजकोट टीआरपी गेम जोन हादसे की सुनवाई करते हुए गुजरात हाईकोर्ट ने राजकोट महानगरपालिका प्रशासन को जमकर फटकार लगाई। कोर्ट ने कहा- बच्चों समेत 28 लोगों की मौत के बाद आपको अब पता चल रहा है कि शहर में दो गेमिंग जोन बिना परमिशन के चल रहे हैं। क्या आप अंधे हो गए हैं, या फिर सो रहे हैं?

राजकोट में गेमिंग सेंटर अनधिकृत परिसर में

प्रशासन और गुजरात सरकार पर बिल्कुल भरोसा नहीं रहा

बनाया गया था और फायर सेफ्टी की एनओसी भी नहीं थी और यह सब कुछ पिछले चार साल से चल रहा था। अब हमें नगर प्रशासन और गुजरात सरकार पर बिल्कुल भरोसा नहीं रहा। कोर्ट ने कहा- यह त्रासदी आंखें खोलने वाली है, सबसे दुखद बात यह है कि इसमें मासूम बच्चों की भी मौत हुई है।

6 अधिकारी सस्पेंड

उधर, गुजरात सरकार ने सोमवार को घटना को लेकर लापरवाही बरतने के आरोप में 6 अधिकारियों को सस्पेंड कर दिया है। इनमें राजकोट महानगरपालिका कॉर्पोरेशन के असिस्टेंट प्लानर, असिस्टेंट इंजीनियर, रोड्स एंड बिल्डिंग डिपार्टमेंट के दो डिप्टी इंजीनियर और दो थानों के पुलिस इंस्पेक्टर शामिल हैं।

परिवार वालों का सब्र टूटा, दो दिन से अस्पताल के चक्कर लगा रहे, बोले- शरीर नहीं तो उसके टुकड़े ही दे दो

बीती 25 मई की शाम राजकोट के टीआरपी गेम जोन में आग लगने से 28 लोगों की मौत हो गई है। भीषण आग में शव इस कदर झुलस गए हैं कि उनकी पहचान डीएनए के जरिए की जा रही है। आज सुबह 5 लोगों के शव उनके परिजनों को सौंप दिए गए। शवों के लिए अन्य परिवार दो दिनों से सिविल और एम्स अस्पताल के चक्कर लगा रहे हैं। राजकोट सिविल अस्पताल में अब बड़ी संख्या में मृतकों के परिजन जमा हैं। डॉक्टर्स से सही जवाब न मिलने पर कई लोग आक्रोशित हो गए। लोगों की पुलिस प्रशासन से भी नोकझोंक हुई। आक्रोशित लोगों ने कहा- हमारे अपनों की जान ते ले ली। अब उनकी लाश भी नहीं दे पा रहे हैं। शरीर नहीं तो उनके टुकड़े ही दे दे।

पटना में राहुल का मंच धंसा, बोले- मोदी, पीएम नहीं बनेंगे

ईडी से बचने के लिए कहते हैं बड़े-बड़े फैसले परमात्मा लेते हैं, मैं नहीं

पटना(एजेंसी)। आरा में राहुल गांधी चुनावी सभा कर रहे हैं। इससे पहले पटना के बख्तियारपुर और पालीगंज में राहुल गांधी की सभा की। पालीगंज में राहुल गांधी जैसे ही मंच पर पहुंचे तो मंच का एक हिस्सा धंस गया। राजद कैंडिडेट मीसा भारती ने राहुल गांधी का हाथ पकड़कर उन्हें संभाला। थोड़ी देर में सुरक्षाकर्मी भी आ गए, लेकिन राहुल ने कहा- मैं ठीक हूं।

सभा को संबोधित करते हुए तेजस्वी यादव को बब्बर शेर बताया। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान में अमीर लोग अमीर होते जा रहे हैं और गरीब लोग गरीब। राहुल ने कहा कि हिंदुस्तान के प्रधानमंत्री ने दस साल में कुछ नहीं किया। राहुल ने पीएम मोदी

पर निशाना साधते हुए कहा कि ईडी से बचने के लिए कहते हैं बड़े-बड़े फैसले मैं नहीं, परमात्मा लेते हैं।

इससे पहले कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने पटना के बख्तियारपुर में जनसभा की। उन्होंने करीब 18 मिनट का भाषण दिया। सभा को संबोधित करते हुए राहुल ने गारंटी दी कि मोदी इस बार पीएम नहीं बनेंगे। उन्होंने बताया कि एक इंटरव्यू में मोदी जी ने कहा था कि बड़े-बड़े फैसले मैं नहीं लेता परमात्मा लेते हैं। ये ऐसा श्राप से बचने के लिए कहते हैं। राहुल ने कहा कि कांग्रेस की सरकार बनने पर ईडी उनसे अडाणी पर सवाल करेगी।

पचमढ़ी की धरती पर पैदा होंगे हिमाचल के सेब

जिले में पहली बार सेब की बागवानी, 500 पौधे लगाए

नर्मदापुरम (नप्र)। कश्मीर, हिमाचल प्रदेश के ठंडे क्षेत्रों की पैदावार सेब यानी एप्पल अब सतपुड़ा की रानी पचमढ़ी में भी पैदा होंगे। यहां 3 साल बाद पचमढ़ी में ही स्थानीय लोगों और पर्यटकों को पचमढ़ी में ही पेड़ से टूटे ताजे सेब खाने को मिलेंगे। नर्मदापुरम जिले के पचमढ़ी में पहली बार सेब के पौधे लगाए गए हैं। उद्यानिकी विभाग द्वारा पचमढ़ी के पोलो उद्यान में सेब की पैदावार का ट्रायल किया है, जो संभवत सफल हो रहा। विभाग ने उद्यान के 2 एकड़ में सेब के 500 पौधे लगाए हैं। सभी पौधे

जीवित हैं। अधिकारियों की मानें तो 3 साल में ये पौधे फल भी देने लगेंगे। विभाग ने यहां हरिमन 99, अन्ना इसराइल, डोरसेट गोल्डन प्रजाति के सेब के पौधे लगाए हैं। उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों ने बताया कि पहले सेब की प्रजाति सिर्फ ठंडे प्रदेशों में होती थी। हालांकि, अब वैज्ञानिकों ने ऐसी प्रजाति भी विकसित की है, जो सामान्य या कम ठंडी जलवायु वाले क्षेत्रों में भी पैदावार देंगी। विभाग ने तीन प्रजातियों के 500 पौधे ट्रायल के लिए लगाए थे। उनका डाटाबेस तैयार किया जा रहा है। वहीं इस ट्रायल के काफी बेहतर परिणाम भी मिल रहे हैं।

नेता प्रतिपक्ष बोले-लोकायुक्त ऑफिस में साजिशन लगी आग!

सिंघार ने कहा-सिंहस्थ घोटाले की फाइल को जलाने की कोशिश हुई, न्यायिक जांच हो

भोपाल (नप्र)। रविवार को भोपाल में लोकायुक्त कार्यालय परिसर में लगी आग को लेकर नेता प्रतिपक्ष ने साजिश की आशंका जताई है। भोपाल में विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने अपने आवास पर मीडिया से चर्चा में कहा- लोकायुक्त कार्यालय में सिंहस्थ घोटाले की जांच की एक फाइल है। जिसमें सैकड़ों एकड़ जमीन की हेराफेरी हुई। कई नेताओं के करीबियों और कंपनियों के नाम हैं। लोकायुक्त कार्यालय में लगी आग में कहीं सिंहस्थ की उस फाइल को जलाने की कोशिश तो नहीं की गई। सिंघार ने आग लगने के मामले की ज्यूडिशियल जांच कराने की मांग की है। नेता प्रतिपक्ष ने कहा- प्रदेश में सरकारी कार्यालयों में आग का दौर चल रहा है। पहले सतपुड़ा भवन, वल्लभ भवन में लगी। अब लोकायुक्त कार्यालयमें आग लगना भी महत्वपूर्ण है। बताने को बहाने बहुत हैं कि शॉर्ट सर्किट हो गया, ट्रांसफार्मर जल गया। लेकिन,

अधिकारियों ने घबराहट में फाइलें जलाने की कोशिश की

उमंग सिंघार ने कहा- मेरी जानकारी के अनुसार लोकायुक्त कार्यालय में सिंहस्थ की भी एक फाइल थी। सिंहस्थ में सैकड़ों एकड़ जमीन में हेराफेरी की गई। इसमें उन कंपनियों के नाम भी थे। कहीं ऐसा तो नहीं कि उन फाइलों को जलाने के लिए यह आग लगाई गई। ऐसे जो अधिकारी थे, जो इस घबराहट में थे कि अगर इसमें जांच होगी तो हम लोग भी इसकी गिरफ्त में आएंगे। मैं समझता हूं यह गंभीर विषय है इसकी जांच होनी चाहिए। चूंकि, मुख्यमंत्री जी जिस प्रकार से एसआईटी गठित करते हैं और उसकी लीपा-पोती करते हैं। अब तक की जो जांचें हुई है मुझे नहीं लगता कि इसकी निष्पक्ष जांच होगी। लेकिन, मैं कांग्रेस विधायक दल की ओर से कहना चाहता हूं कि इसको विधानसभा में उठाया जाएगा। और प्रदेश में कई घोटाले हो चुके हैं उनकी लंबी लिस्ट है इन घोटालों को लेकर अभी तक सही स्पष्ट जांच पटल पर जनता के सामने क्यों नहीं आ रही?

लोकायुक्त की जिस प्रकार से नियुक्ति हुई। शनिवार को आदेश हुआ और रविवार को शपथ दिलाई गई। आनन-फानन में तत्काल नया लोकायुक्त नियुक्त किया गया। इसके पीछे क्या कारण है। क्योंकि, इस बारे में सुप्रीम कोर्ट भी गया हूं। कहीं न कहीं, सरकार डरी हुई है कि सुप्रीम कोर्ट उनके खिलाफ निर्णय न दे दे। रविवार को लोकायुक्त कार्यालय परिसर में आग लग गई थी। हालांकि आग पर जल्दी काबू पा लिया गया था। लोकायुक्त कार्यालय की ओर से इस आग को लेकर स्पष्टीकरण जारी कर कहा गया कि आग आफिस के बाहर लगी थी इस आग से दस्तावेजों को नुकसान नहीं हुआ है।

पटवारी की पिटीशन पर इमरती को नोटिस

रस खत्म हो गया, बयान पर कराई थी एफआईआर; हाईकोर्ट ने पूछा-आरोप का आधार क्या?

जबलपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने पूर्व मंत्री व बीजेपी नेता इमरती देवी और मध्यप्रदेश शासन को नोटिस जारी किए हैं। ये नोटिस सोमवार को कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी की पिटीशन पर सुनवाई के बाद दिए गए। जस्टिस संजय द्विवेदी की कोर्ट ने इमरती देवी और मध्यप्रदेश शासन से पूछा है कि पटवारी पर आरोप लगाने का आधार क्या है? दरअसल, इमरती का रस खत्म हो गया... बयान पर पीसीसी चीफ जीतू पटवारी के खिलाफ पूर्व मंत्री इमरती देवी ने ग्वालियर के डबरा थाने में धारा 509 (महिला के साथ अभद्र भाषा का प्रयोग कर उसके सम्मान को ठेस पहुंचाने की कोशिश) और अनुसूचित जाति/जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम की धारा 3 (1) (आर) के तहत एफआईआर कराई थी। इसी एफआईआर को रद्द कराने के लिए पटवारी ने हाईकोर्ट में पिटीशन लगाई है। हाईकोर्ट ने पटवारी को यह राहत भी दी है कि यदि उनके खिलाफ एफआईआर या गिरफ्तारी जैसी कोई बात आती है तो वे तत्काल कोर्ट की शरण में आ सकते हैं। अगली सुनवाई 2 जुलाई को होगी।

दलील दी कि राजनीतिक लाभ के लिए कराई एफआईआर

पीसीसी चीफ पटवारी की ओर से मामले की पैरवी अधिवक्ता विभोर खंडेलवाल और जयेश गुरनानी ने की। गुरनानी ने बताया, पूर्व मंत्री इमरती देवी ने एफआईआर में यह कहा है कि जीतू पटवारी के बयान से उनकी लज्जा भंग हुई है। वे एससी/एसटी एक्ट की बात कर रही हैं। एफआईआर में भी यह एक्ट लगा है। यह पूरी तरह गलत है क्योंकि बयान में जातिसूचक शब्द का इस्तेमाल नहीं हुआ है इस उद्देश्य से भी बयान नहीं दिया गया कि एससी-एसटी वर्ग की महिला की लज्जा भंग हो। एफआईआर सिर्फ पॉलिटिकल माइलेज गेन के लिए कराई गई है।

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में भालू फैमिली का वीडियो

- मां की पीठ पर बैठकर जंगल की सैर में निकले बच्चे; पर्यटक हुए रोमांचित

उमरिया (नप्र)। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में मादा भालू अपने दो बच्चों को पीठ में बैठाकर सैर करती दिखाई दी। मगधी जोन में ये नजारा देख पर्यटक रोमांचित हो गए। उन्होंने इसका वीडियो बनाकर वायरल कर दिया। दरअसल, पर्यटक बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में प्राकृतिक सुंदरता का आनंद ले रहे थे। पर्यटक वन्यप्राणियों के दीदार के लिए घूम रहे थे, तभी मगधी जोन में मादा भालू अपने दो बच्चों को पीठ में बैठाकर जाते दिखी। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में कोर और बफर जोन के जंगलों में शाकाहारी और मांसाहारी वन्यप्राणी मिलते हैं, लेकिन भालू के दीदार दिन में बहुत कम होते हैं।

भोपाल में आर्मी जवान के साथ जालसाजी

- कार मिली नहीं और खाते से कटने लगी इंस्टालमेंट

भोपाल (नप्र)। भोपाल की कोहेफिजा पुलिस ने एक आर्मी जवान की शिकायत पर जालसाजी का केस दर्ज किया है। फाइनेंस कंपनी के एजेंट ने उससे कार फाइनेंस कराने के नाम पर डॉक्यूमेंट लिए थे। अचानक फरियादी के बैंक अकाउंट से किश्तें कटने लगी। पड़ताल करने पर पता लगा की उनके नाम कार फाइनेंस है। हालांकि कार की डिलीवरी उन्हें कभी मिली ही नहीं थी। जिसके बाद मामले की शिकायत थाने में की गई। जांच के बाद पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। कोहेफिजा पुलिस ने बताया कि सेना के जवान सुनील कुमार नर्मदापुरम रोड के किनारे एक कॉलोनी में रहते हैं। दो साल पहले उन्होंने कार खरीदने की योजना बनाई थी। कार खरीदने के लिए उन्हें लोन की जरुरत थी। इसी दौरान उनकी मुलाका अमर सिंह नाम के युवक से हुई है। वह कोहेफिजा स्थित मेघना फायनेंस कंपनी के लिए एजेंट के रूप में काम करता था। दोनों के बीच जब बातचीत हुई तो एजेंट ने एमपी नगर स्थित इंडो स्टार कंपनी से लोन दिलाने की बात कही।

डील तय होने पर दिए थे डॉक्यूमेंट

डील तय हो जाने के बाद सुनील कुमार ने अपने दस्तावेज अमर सिंह को दे दिए। आर्मी जवान ने 4 लाख 21 हजार रुपए के कार लोन के लिए एप्लाई किया था, उसका लोन स्वीकृत भी हो गया। इसी दौरान सुनील कुमार की पोस्टिंग अयोध्या में हो गई तो पूरी प्रक्रिया में थोड़ा विलंब हो गया। इसी सुनील कुमार को लोन तो नहीं मिला लेकिन उनके खाते से 15240-15240 रुपए की दो किस्तें खाते से कट गई। वे हैरान हो गए कि जब लोन का पैसा खाते में आया ही नहीं तो फिर किस्तें कैसे कट सकती हैं।

एजेंट बोला खाते में पैसा मत रखो

उन्होंने अमर को यह बात बताई तो उसने कहा कि आप अपने खाते में पैसे रखें ही मत। उसकी यह बात सुनकर उन्हें संदेह हो गया तथा उन्होंने पुलिस को मामले की शिकायत कर दी। पुलिस ने जब जांच की तो पता चला कि अमर ने दोनों ही किस्तें अपने खाते में जमा करवा लीं है। जांच पूरी होने के बाद पुलिस ने अमर के खिलाफ धोखाधड़ी का प्रकरण दर्ज कर लिया है।

महाकाल शयन आरती में प्रवेश के लिए 1100 मांगे

गुड़गांव के श्रद्धालुओं से डिमांड; पंडित ने कहा-यहां ऊपर से नीचे तक पैसा लगता है

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में बाबा महाकाल की शयन आरती में प्रवेश के नाम पर गुड़गांव से आए दो दंपत्ति से रुपए मांगने का मामला सामने आया है। खुद को पंडित बताने वाले शख्स ने प्रति श्रद्धालु 1100 रुपए मांगे। यह भी कहा कि यहां ऊपर से नीचे तक सबको पैसा लगता है। श्रद्धालु अब कलेक्टर नीरज कुमार सिंह से मामले की शिकायत करेंगे। बता दें कि श्री महाकालेश्वर मंदिर में शयन आरती में प्रवेश के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जाता। इसके बावजूद श्रद्धालुओं से अवैध वसूली के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। पिछले हफ्ते मुंबई की महिला श्रद्धालु से भी पुरोहित ने भस्म आरती के नाम पर 1500 रुपए की मांग की थी।

पंडित ने जहां खड़ा किया, वहां से सुरक्षाकर्मियों ने हटाया

गुड़गांव से आई निधि शर्मा ने बताया, 23 मई को मैं अपने पति परलव शर्मा और ऋतु गुप्ता व उनके पति धीरज गुप्ता महाकाल मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचे थे। हमें भस्म आरती की परमिशन नहीं मिली। शयन आरती में शामिल होने का निर्णय लिया। हम चारों ने 250 रुपए प्रति श्रद्धालु की शीघ्र दर्शन की टिकट ले ली। लाइन में लगे तो पता चला कि आगे जाकर यह लाइन आम श्रद्धालुओं की कतार में मिल गई। इसी दौरान वहां खड़ा एक शख्स हमारे पास आया। उसने खुद को पंडित बताते हुए कहा कि शयन आरती देखना हो तो 1100 रुपए प्रति व्यक्ति लगेगा। हम आपको आगे बैठा देंगे। 4400 रुपए में बात तय हुई। पंडित ने आरती के बाद रुपए देने का कहा। पंडित ने हमें जिस जगह खड़ा किया, वहां से सुरक्षाकर्मियों ने हमें हटा दिया। हम लोगों को आगे जाने के लिए कहा गया। पंडित ने हमें आरती में बैठाने की कई बार कोशिश की लेकिन उनकी व्यवस्था नहीं जम पाई। हमने टीवी में देखकर आरती की और हमारे रुपए भी बच गए।

कलेक्टर को मेल पर करेंगी शिकायत

निधि का कहना है कि महाकाल मंदिर में इस तरह की लूट और आरती के नाम पर रुपए वसूलने वालों के खिलाफ कलेक्टर को जल्द ही मेल करेंगी। 182 नंबर पर भी शिकायत करेंगी। उन्होंने कहा कि इतनी दूर से आने के बाद मंदिर की व्यवस्था को देखकर काफी बुरा लगता है। महाकाल मंदिर में 16 मई को भी मुंबई की सोशल एक्टिविस्ट मधु शंकर से 1500 रुपए मांगे जाने का मामला सामने आ चुका है। महिला ने कलेक्टर नीरज कुमार सिंह से ईमेल के जरिए शिकायत की थी। पुरोहित और खुद के बीच बातचीत का ऑडियो भी कलेक्टर को उपलब्ध कराया था।

भोपाल के गेम जोन, मॉल, स्कूल-कॉलेज की होगी जांच

फायर एनओसी जांची जाएगी; ध्वनि प्रदूषण पर भी रोक लगेगी

भोपाल (नप्र)। राजकोट टीआरपी गेम जोन हादसे से सबक लेकर अब भोपाल के गेम जोन, मॉल, स्कूल-कॉलेज, बड़ी प्राइवेट और सरकारी बिल्डिंग की जांच होगी। जांच में फायर एनओसी देखी जाएगी। वहीं, ध्वनि प्रदूषण पर भी रोक लगेगी। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने सोमवार को यह आदेश दिए। कलेक्टर ने सोमवार को कलेक्टोरेट सभाकक्ष में मीटिंग की। इस दौरान सभी विभागों के लंबित कार्यों एवं सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों की समीक्षा भी की गई। ध्वनि प्रदूषण को लेकर उन्होंने कहा कि शासन के निर्देशों का सख्ती से पालन हो। इनका उल्लंघन करने वालों पर सभी एसडीएम, पुलिस प्रशासन का सहयोग लेकर कार्रवाई करें।

आग की घटनाओं को लेकर तहसील स्तर पर टीम बनेगी: कलेक्टर ने कहा कि आग लगने की घटनाओं के रोकथाम के लिए प्रत्येक तहसील स्तर पर एक टीम बनाई जाए। स्कूल, कॉलेज, कोचिंग, गेम जोन, मॉल, सरकारी और प्राइवेट बिल्डिंग एवं अन्य सभी सार्वजनिक स्थल जहां बड़ी संख्या में लोगों का आना-जाना होता है।

महाकाल मंदिर में लड्डू प्रसाद और दान काउंटर बढ़ाए

पुराने म्यूजियम में काउंटर शुरू हुए, श्रद्धालुओं को मिलेंगी सुविधा

उज्जैन (नप्र)। विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में हजारों भक्त प्रतिदिन भगवान महाकाल के दर्शन के लिए आते हैं। लिहाजा मंदिर समिति ने भक्तों की सुविधा के लिए अब निर्गम द्वार की ओर जाने वाले मार्ग पर पुराने म्यूजियम भवन में दान काउंटर और लड्डू प्रसाद काउंटर शुरू किए हैं।

एक काउंटर शंख चौराहे की ओर भी लगाया गया है, जिससे बाहर जाने वाले श्रद्धालु बाहर से ही प्रसादी ले सकेंगे। श्री महाकालेश्वर मंदिर में ग्रीष्म अवकाश के कारण लाखों की संख्या में श्रद्धालु देश भर से भगवान महाकाल के दर्शन के लिए आ रहे हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए मंदिर प्रशासन ने मंदिर परिसर के निर्गम द्वार की ओर पुराने म्यूजियम में निशुल्क भोजन प्रसादी के टिकट काउंटर के साथ ही दान काउंटर और लड्डू प्रसाद काउंटर भी प्रारंभ कर दिए हैं। पुराना निर्गम द्वार शुरू होने से मंदिर से जाने वाले श्रद्धालु नए काउंटर से भोजन प्रसादी के कूपन और लड्डू प्रसाद के पैकेट प्राप्त करते हैं। मंदिर समिति के सहायक प्रशासक मूलचंद जूनवाल ने बताया कि मंदिर परिसर में म्यूजियम के अलावा शंख चौराहे पर भी एक लड्डू प्रसाद का काउंटर लगाया गया है।

हर घंटे मंदिर में पानी का हो रहा छिड़काव

श्री महाकालेश्वर मंदिर में अवकाश के कारण बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं। तेज धूप और गर्मी को देखते हुए दर्शनार्थियों की सुविधा के लिए मंदिर प्रशासन ने दर्शन मार्ग पर कूलर, पंखे की व्यवस्था की है। इसके अलावा मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं का पैर नही जले और परिसर में लगे पत्थर भी ठंडा रहे। इसलिए सुबह से शाम तक हर घंटे पानी का छिड़काव करवाया जा रहा है। गौरतलब है कि नौतपा के चलते तेज गर्मी का दौर जारी है। हालत यह है कि सुबह आठ बजे से ही परिसर के पत्थर गर्म होना शुरू हो जाते है। तेज गर्मी होने के बाद भी श्रद्धालुओं के भीड़ महाकाल मंदिर में लगातार बनी हुई है।

प्रदेश के 46 जिलों में भीषण गर्मी, लू का अलर्ट

46 डिग्री गर्मी में रूद्राक्ष लेने कुबरेश्वर धाम आए श्रद्धालु,रीवा-विदिशा में नदी में नहाने पहुंचे लोग

भोपाल (नप्र)। नौतपा के तीसरे दिन भी मध्यप्रदेश में भीषण गर्मी पड़ रही है। सुबह से ही सूरज के तीखे तेवर हैं। दोपहर में सागर में 46.2 डिग्री, सीहोर में 46 डिग्री, ग्वालियर में 44.5 डिग्री और भोपाल में 44 डिग्री तापमान रहा। सीहोर में 46 डिग्री गर्मी में रूद्राक्ष लेने श्रद्धालु कुबरेश्वर धाम पहुंचे। रीवा और विदिशा में गर्मी के बचने के लिए लोग नदी में नहाने पहुंचे। रतलाम में जगह-जगह लोगों के लिए वाटर केन की गाड़ियां लगाई गई है। भोपाल में भी भीषण गर्मी पड़ रही है। यहां तापमान 44 डिग्री दर्ज किया गया। यहां गर्मी से सड़कों पर डामर पिघल गया। इससे पहले रविवार को भी पूरा प्रदेश जमकर तपा।

राजगढ़, शाजापुर, निवाड़ी, सागर, गुना, खजुराहो और सीहोर जिले सबसे गर्म रहे, जहां पारा 46 डिग्री के पार रहा। भोपाल-सागर में तो 10 साल में दूसरी बार टेम्प्रेचर सबसे अधिक रहा। रतलाम, धार-राजगढ़ में आज लू का रेड अलर्ट है। वहीं, भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर समेत 46 जिलों में तेज गर्मी पड़ने की संभावना है।

संपादकीय

नर्सिंग घोटाले की जांच में घोटाला

मप्र में मतदान की प्रक्रिया पूरी होने और चुनाव प्रचार का गुबार थमने के बाद घोटालों के बम फिर फूटने लगे हैं। नई बात यह है कि इस बार घोटालों के साथ साथ घोटालों की जांच में भी भारी भ्रष्टाचार सामने आ रहा है और वो भी किसी सामान्य जांच में नहीं बल्कि सीबीआई जांच में। अब जांच एजेंसी ही फर्जीवाड़ा करने लगे तो किस पर भरोसा किया जाए? मामला मप्र के निजी नर्सिंग कॉलेज घोटाले का है। प्रदेश में करीब 400 प्रायवेट नर्सिंग कॉलेजों को बिना किसी अधोसरंचना और सुविधा के मान्यता दे दी गई। मामला जब हाईकोर्ट पहुंचा तो कोर्ट ने इनमें से 94 निजी नर्सिंग कॉलेजों की मान्यता रद्द कर दी तथा पूरे घोटाले की सीबीआई जांच के आदेश दिए। लेकिन यहां रक्षक ही भक्षक साबित हुए। आलम यह है कि जांचकर्ता सीबीआई अधिकारियों ने ही 10-10 लाख रू. लेकर फर्जी नर्सिंग कॉलेजों को सही बता दिया। जब इसकी शिकायत भी सीबीआई में हुई तो सीबीआई मुख्यालय हरकत में उसने जांचकर्ता एक इंस्पेक्टर राहुल राज को बर्खास्त कर दिया तथा दो जांच अधिकारियों को गिरफ्तार किया गया है। एक डीएसपी का तबादला कर दिया गया। इस मामले में अभी और कार्रवाई हो सकती है, क्योंकि इस प्रकरण ने देश में सीबीआई के नाम पर बट्टा लगा दिया है। पूरा मामला सुर्खियों में आने के बाद मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने कहा कि नर्सिंग कॉलेज मान्यता में गड़बड़ी करने वाले सभी अधिकारी कर्मचारी बर्खास्त होंगे। साथ नर्सिंग में प्रवेश में घोटाला रोकने के लिए अब इंजीनियरिंग और मेडिकल की तर्ज पर नर्सिंग स्टूडेंट्स की राज्य स्तर पर प्रवेश परीक्षा कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि मप्र में केंद्र के नर्सिंग एक्ट के अनुसार, राज्य में एक आयोग का भी गठन किया जाएगा। नर्सिंग शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के लिए शासकीय नर्सिंग संस्थानों में रिक्त पदों पर जल्द भर्ती के निर्देश भी सीएम ने दिए हैं। उन्होंने कहा कि सभी दलालों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। हैरानी की बात यह है कि जिस घोटाले की जांच सीबीआई को इसलिए सौंपी गई थी कि वो दोषियों को सजा दिलवाए, उसी सीबीआई के इन जांच अधिकारियों ने कॉलेजों की जांच की आड़ में जमकर भ्रष्टाचार किया। जांच के नाम पर 2 से 10 लाख रुपये रेट फिक्स कर दिए। दिलचस्प बात यह है कि नर्सिंग घोटाले की जांच में पकड़ा गया सीबीआई इंस्पेक्टर राहुल राज व्यापमं घोटाला की जांच में भी शामिल था। ऐसे में पूर्व बहुत बड़े व्यापमं घोटाले की जांच रिपोर्ट पर सवालिया निशान लग गए हैं। इसमें सीबीआई ने कई लोगों को क्लीन चिट दे दी थी। गौरतलब है कि जबलपुर की लॉ स्टूडेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष विशाल बघेल ने प्रदेश के 453 नर्सिंग कॉलेजों को मान्यता देने में फर्जीवाड़े का आरोप लगाते हुए हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की थी। इसमें कहा गया है कि कई नर्सिंग कॉलेज गाड़ियों के शोरूम और वर्कशॉप में चल रहे हैं। जिनमें न लैब-लाइब्रेरी है और न ही कॉलेज-हॉस्टल की बिल्डिंग है। याचिका में इस फर्जीवाड़े को प्रदेश के हेल्थ सेक्टर से खिलवाड़ बताया गया। इसके बाद हाईकोर्ट के आदेश पर घोटाले की सीबीआई जांच शुरू हुई। तब जांच में भी भारी घोटाला सामने आया। प्रदेश में नर्सिंग कॉलेजों की मान्यता खत्म होने और चार सालों से नर्सिंग कॉलेजों में परीक्षाएं न होने से इनमे पढ़ने वाले 40 हजार छात्र छात्राओं का भविष्य अधर में है। उधर घोटाला उजागर करने वाले कांग्रेस नेता रवि परमार को जान से मारने की धमकियां मिल रही हैं। अभी भी घोटाले को दबाने की कोशिशें जारी हैं। मप्र में सरकारी व निजी नर्सिंग कॉलेजों को मान्यता देने का काम मप्र नर्सिंग काउंसिल करती है। सवाल यह भी है कि इन फर्जी नर्सिंग कॉलेजों को मान्यता दिलाने के पीछे किस बड़े राजनेता का हाथ है?

सांड को पूंछ से पकड़ने का पर्यावरणीय पाखंड

नजरिया

बादल सरोज

लेखक लोक जतन के संपादक हैं।

गर्मी प्रचंड है- इतनी प्रचंड कि कहीं ट्रेक्टर के बोनट पर रोटियाँ सेंकने तो कहीं रेत में पापड़ भूने जाने की खबरें आ रही हैं। तापमान हाफ सेंचुरी के एकदम नजदीक पहुँच गया है। मनुष्य का शरीर 37-38 डिग्री तक का तापमान सह सकता है मगर गर्मी है कि अनेक जगहों पर 47 से 49 तक पहुँच चुकी है। मुमकिन है कहीं 50 डिग्री सेल्सियस को छू भी लिया हो। मेडिकल जर्नल लैंसेट के मुताबिक अगर बाहरी टेम्प्रेचर 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाए तो मांसपेशियां जवाब देने लगती हैं। जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण अंगों के काम करना बंद करने से लेकर हार्ट अटैक जैसी समस्याएं हो सकती हैं। इस तरह देखें तो गर्मी जानलेवा हो चली है ; आदमखोर हो गयी है। यह अचानक नहीं हुआ है; इस साल की शुरुआत में ही चेतावनी आ चुकी थी कि 2024 सबसे गर्म वर्ष होने जा रहा है। इसके पीछे प्रशांत महासागर की ऊपरी सतह को उबाल देने वाले अल नीनो का कितना प्रभाव है, समन्दर के नीचे की ठंडी लहरों को सहेज संभालने वाली ला नीना की कितनी असफलता है, इस सबकी मौसम वैज्ञानिक समीक्षा कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन-ग्लोबल वार्मिंग- आने वाले दिनों में और कितना कहर ढहाने वाले हैं इस पर कई मोटी मोटी रिपोर्ट्स आयेंगी, चिंता की लकीरें थोड़ी गहरी हो जायेंगी और फिर बारिश आने के बाद सारी चिंता दूर हुयी मान ली जायेगी। इन पंक्तियों का मकसद पृथ्वी और उस पर रहने वाले प्राणियों के अस्तित्व के लिए संकट बन गए जलवायु परिवर्तन की जिम्मेदार मुनाफे की हवस में मदमाती दुष्ट पूँजी के पापी इरादे उजागर करना नहीं है। जेनेवा में हुए तीन वैश्विक सम्मेलनों से लेकर रिओ, बर्लिन, कोपेनहेगेन से होते हुए क्योटो प्रोटोकोल तक हुई कोशिशों में अमरीका सहित उसके लगुए भगुए धनी देशों के समूह ने जो पलीता लगाया है वह सामान्य जानकारी रखने वाला भी जानने लगा है।

ये पंक्तियाँ उन भोले भाले, सीधे सादे मनुष्यों के लिए हैं जो पृथ्वी के साथ जघन्य अपराध करने वालों के प्रायोजित प्रचार के झांसे में आ जाते हैं और खुद को ही दोषी मानते हुए आत्मधिक्कार करते करते कुछ दिखावटी समाधानों से हल निकालने का मुगालता पाल लेते हैं। ये भले लोग वे हैं जिन्हें तापमान के 40 डिग्री पहुँचते ही हर नागरिक को कम से कम एक पेड़ लगाने की हिदायत देने की याद आती है। पेड़ लगाना अच्छी बात है, जरूरी है, ऐसा किया जाना चाहिए- मगर इसे ही एकमात्र तरीका मान लेना कुछ ज्यादा ही भोलापन है। ऐसा करना वनों, जंगलों, पेड़ों का विनाश करके उसे विकास बताने वालों की धूर्तता पर पर्दा डालना है। और यह काम आम आदमी नहीं कर रहा है- पूँजी पिशाच और उस बेताल को बिना कोई सवाल जवाब किये अपने कंधे पर ढो रही सरकारें कर रही हैं। किस विनाशकारी तेजी और ध्वंसकारी गति से कर रही हैं इसे चंद तथ्यों से समझा जा सकता है।

खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के मुताबिक़ वर्ष 2015 से 20 के बीच भारत में प्रति वर्ष 6 लाख 68 हजार हेक्टेयर वनों का विनाश किया गया। यह दुनिया में दूसरे नम्बर का वन-विनाश था। लगभग इसी दौर में 4 लाख 14 हजार हेक्टेयर ऐसे प्राकृतिक वनों, जो बारिश के लिए जलवायु तैयार करते थे, को रौंद दिया गया। इन्हें अब कभी दोबारा उगाया नहीं जा सकता। इनके अलावा पिछले दो दशकों में 2 करोड़ 33 लाख हेक्टेयर वृक्ष आच्छादित क्षेत्र उजाड़ दिए गए; इनमे लगे सभी पेड़ उखाड़ दिए गए। कुल मिलाकर यह भारत की कुल वृक्ष आच्छादित भूमि का 18 प्रतिशत होता है। एक और रिपोर्ट के हिसाब से पिछले तीसेक वर्षों में कोई 14 हजार वर्ग किलोमीटर वनों को माइनिंग, बिजली और डिफेन्स की परियोजनाओं के लिए लिया गया है।

हाल तक इस बारे में कुछ प्रावधान हुआ करते थे। पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने के लिए, भले दिखावे की ही सही, भले कागजों पर ही सही कुछ शर्तें, कुछ बाध्यताएं हुआ करती थीं। हालांकि इनके अमल की स्थिति क्या थी इसे समझने के लिए एक ही उदाहरण काफी है। मध्यप्रदेश के सिंगरौली जिले में महान विद्युत परियोजना और कोल ब्लॉक्स के नाम पर एस्सार (अब अडानी) और अम्बानी ने जो संयंत्र लगाए या जो खुदाई की गई, की जानी थी, उससे इस अत्यंत घने और पुराने जंगल में करोड़ों पेड़ का जंगल उजाड़ हुआ। इसकी क्षतिपूर्ति के लिए सघन वृक्षारोपण किये जाने का जिम्मा इन्ही कंपनियों का था। इसमें किस तरह का मजाक और धांधलियां की गयीं परियोजनाओं में काटे गए कोई 20 लाख वृक्षों की क्षतिपूर्ति के लिए इन कंपनियों से इतने ही पेड़ लगाने के अमल में किये गए कांड से समझा जा सकता है। जब एक्शन टेकन रिपोर्ट माँगी गयी तो इन कंपनियों ने दावा किया कि उन्होंने सिंगरौली से कोई साढ़े चार सौ किलोमीटर दूर सागर और दमोह में पौधे लगा दिए हैं। बिना सागर या दमोह जाए, बिना उस वृक्षारोपण को देखे ही सरकारों ने भक्त-भाव के साथ उनके इस हास्यास्पद दावे को मान लिया। यह स्थिति सिर्फ महान परियोजना की नहीं है बाकियों के मामले में भी उतनी ही सच है। ऐसे अनेक उदाहरण है जिनमे बिना किसी अपवाद के पुनर्वनीकरण के सारे प्रावधानों की धज्जियां उड़ाई गयी।

इस तरह के क्रूर मजाकों में सरकारें भी पीछे नहीं रहीं। 5 जुलाई 2017 को मध्यप्रदेश में भाजपा सरकार द्वारा महज 12 घंटे में लगाए गए 6 करोड़ वृक्षों के पौधारोपण की उपलब्धि का ऐलान कर दिया गया। पूरी दुनिया में इस असाधारण वृक्षारोपण की गूँज हुयी थी। लेकिन जुलाई 2018 में जब इनका सरसरी ऑडिट किया गया तो पता चला कि उनमे से एक प्रतिशत भी सलामत नहीं बचे है। ऐसा ही एक करिश्मा उत्तरप्रदेश की योगी सरकार ने एक दिन में 5 करोड़ पौधे लगाने का किया। पुनर्वनीकरण (अफॉरेस्टेशन) के प्रति सत्तासीनों की गंभीरता की हालत यह है कि उसके लिए जो फंड आवंटित किया गया था उसका सिर्फ 6 प्रतिशत हुआ।

मोदी राज के आते ही इन रही सही खानापूर्तियों को भी समाप्त कर दिया गया। वर्ष 2015 में मोदी सरकार के मंत्री प्रकाश जावडेकर ने वन और पर्यावरण विभाग की पूर्व-अनुमतियों को 'देश' के विकास में बाधक बताया और उनकी बाध्यता को सम्पात ही कर दिया गया। बड़े बड़े और कई बार अनुपयोगी हाईवे- सुपर एक्सप्रेस हाईवे- एक्स्ट्रा सुपर एक्सप्रेस हाईवे के नाम पर किये विनाश को विकास बताया गया। जल-जंगल जमीन से जुड़े सारे क़ानून ताक पर रखकर कार्पोरेट्स को वन भूमियाँ थमा दी गयी। नतीजा यह निकला कि जंगल नेस्तनाबूद कर दिए, नदियाँ सुखा दीं, धरती खोदकर रख दी, सिर्फ आदिवासियों और परम्परागत वनवासियों को ही नहीं पशुपक्षियों को भी उनके घरों से बेदखल कर दिया, पारिस्थितिकी (इकोलॉजी) मटियामेट करके रख दी। बर्बादी कितनी भयावह है इसे देखने के लिए लैटिन अमरीका या नाईजीरिया या कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं है। जिसे देश की ऊर्जा राजधानी कहा जाता है उस सिंगरौली के बगल में रेणूकूट नाम की जगह है, उत्तरप्रदेश के सोनभद्र जिले में पड़ती है, वहां से सड़क मार्ग से यात्रा शुरू कीजिये और सिंगरोली, सीधी, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर से गुजरते हुए छत्तीसगढ़ के कोरिया, सरगुजा क्रॉस करते हुए कोरबा तक पहुंचिये। अंदर मत जाइये - सड़क सड़क ही चलिए और सच्चाई अपनी नंगी आँखों से देख लीजिये। अपने कठपुतली शासकों के लिए ऐशोआराम और चुनाव जीतने के साधन भर मुहैया करके कारपोरेट ने हजारों वर्ष पुराने जंगल, लाखों करोड़ों वर्ष पुरानी पहाड़ियों सहित सब कुछ उधेड़ कर रख दिया है। आज भी यही सिलसिला जारी है - कुछ ज्यादा ही तेजी से जारी है।

पूँजी की पहली को बूझने और उसके कालू जादू को भेदने वाले मार्क्स 1848 में ही कह गए थे कि पूँजी पिशाच मुनाफे के लिए न सिर्फ देशों की सीमायें लांघेंगे, मानवीय संबंधों को लाभ हानि के बर्फीले पानी मे डुबाकर, सारे रिश्तों को रुपया पैसा में बदल देंगे, बल्कि प्रकृति का भी इतना भयानक दोहन करेंगे कि पृथ्वी का अस्तित्व तक खतरे में पड़ जायेगा। वही हो रहा है दिनदहाड़े, खुले खजाने। भारी होती हुई तिजोरियों के बोझ से दम घुट रहा है धरती का - गला सूख रहा है प्रकृति का। इसलिए तप रहे हैं सूरज- इसलिए धधक रही है सड़कें- भभक रहे हैं घर!!

इस विकास के नाम पर आये इस सर्वनाश के सांड को पूँछ से नहीं सींग से पकड़ना होगा। आत्मधिक्कार करने और एक पेड़ लगाकर उसका परिष्कार करने की सदिच्छा से काम नहीं चलेगा; जंगल और पृथ्वी और उसकी मनुष्यता कैसे बचाई जा सकती है यह चार साल से बस्तर के सिलगेर सहित बीसियों स्थानों पर भूमि के अडानीकरण के विरुद्ध धरने पर बैठे आदिवासियों से, हसदेव का जंगल बचाने के लिए डटे नागरिकों ने उदाहरण सहित समझाया है। पेड़ लगाना ठीक है मगर असली समाधान पेड़, वन. जंगल की तबाही के खिलाफ, इस तरह विनाश को विकास बताने वाली सरकारों और उनकी नीतियों के खिलाफ लड़कर ही निकलेगा।

आम चुनाव 24

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अरुणाचल : कयास लगाना कठिन...

अरुणाचल उत्तर-पूर्व का सीमांत प्रदेश है, जिसे कभी नेफा के नाम से जाना जाता था और जिसके लिये डॉ. लोहिया ने कभी बहुत सुंदर संज्ञा-उर्वसी अं-(उत्तर पूर्व सीमांत अंचल) प्रयुक्त की थी। उसकी शिखाएं. चीन, तिब्बत और म्यांमार जैसे राष्ट्रों से मिलती है और उसका शाब्दिक अर्थ है उगते सूर्य का देश। इन दिनों यहां भी चुनाव की स्वर - लहरी तैर रही है और देश की दोनों प्रमुख पार्टियों- कांग्रेस और बीजेपी के मध्य गजब की कश्मकश है। अरुणाचल उन प्रदेशों की तालिका में सम्मिलित है, जहां डबल- इंजन सरकारें हैं। 60 सदस्यों की विधानसभा में गत चुनाव में बीजेपी ने 47 सीटें जीती थीं और मुक्तों से निर्वाचित पेमा खांडू के नेतृत्व में है वह सत्ता में है।

अरुणाचल में लोकसभा की दो सीट हैं। ईस्ट और वेस्ट। अरुणाचल इन दो सीटों में यकसां बंटा हुआ है। उल्लेखनीय बात यह है कि अरुणाचल में लोक सभा और विधानसभा के चुनाव साथ-साथ हो रहे हैं। लोकसभा चुनाव की बात करें तो सत्तारूढ़ दल की प्रतिष्ठा वेस्ट में दांव पर है, जहाँ केन्द्रीय मंत्री रहे किरेन रिजिजू भाग्य आजमा रहे हैं। कांग्रेस ने उनके मुकाबले नवाम टूकी को मैदान में उतारा है। उधर ईस्ट में बीजेपी के टपीर गाओ और कांग्रेस के बोसीराम सिराम आमने-सामने हैं। टपीर ने लोक सभा में अपने प्रदर्शन से सबका ध्यान आकृष्ट किया है। वह सयेत सांसद हैं। फरवरी, सन 2020 में लोकसभा में बोलते हुये उन्होंने सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया कि भारतवर्ष के मानचित्र में अनेक इलाके नदारद हैं। नक्शों में चगलागाम क्षेत्र के हाडीग्रा दकाहरु और गलाई टगारू दरों का कोई उल्लेख नहीं है। चीन की विस्तारवादी नीतियों के परिप्रेक्ष्य में यह चूक मायने रखती है।

नक्शे की ही बात करें तो अरुणाचल आजादी के तीस साल बाद नक्शे में उभरा। प्रारंभिक वर्षों में यहां की दोनों सीटों पर कांग्रेस का वर्चस्व रहा। परिदृश्य में बीजेपी का प्रवेश बहुत बाद की बात है। अरुणाचल वेस्ट में सन 1977 के चुनाव में कांग्रेस के रिंचिंग खांडू ख्रीमे जीते और तदंतर चार चुनावों में दूसरी पार्टी के प्रेम खांडू थुंगन। यह क्रम सन 1996 में निर्दल तोमो रीबा की जीत से खंडित हुआ। तदंतर सन 98 और सन् 99 के चुनाव में अरुणाचल कांग्रेस और कांग्रेस के क्रमशः ओमाक अपांग और जावाम गामलिनझ जीते। सन 2004 में यह सीट किरेन रिजिजू की बदौलत बीजेपी की झोली में आई । सन् 2009 में वह कांग्रेस के तकाम संजोय से मात्र 1314 वोटों से हार गये, मगर सन 2014 और सन् 19 में उन्होंने पनी जीत की पुनरावृत्ति की। आरुणाचल ईस्ट की बात करें तो वहां भी सन 1999 तक प्रायः कांग्रेस के उम्मीदवार जीतते रहे। शुरूआत निर्दल बाकिन पेर्टिन से हुई, मगर कांग्रेस की विजयी श्रृंखला को सोवेंग तायेंग (सन् 80) वांगफा लोवांगर (सन् 84) और लाएटा उम्ब्रे (सन् 89 और सन् 91) ने आगे बढ़ाया। उसके बाद तीन चुनावों में वांगचा राजकुमार की जीत बड़ी दिलचस्प रही। पहली बार वह निर्दल, फिर अरुणाचल कांग्रेस और आखिरी बार कांग्रेस के टिकट पर जीते। सन 2004 में यहां भी बीजेपी ने जीत का परचम लहराया। उसके प्रत्याशी टपीर गाओ जीते और फिर दो चुनावों में लगातार कांग्रेस के निनोंगएरिंग से हारे। मगर सन् 2019 में उन्होंने लोवांगचा वांगलात को करीब 70 हजार मतों से मात देकर इतिहास रच दिया।

करीब 15 लाख की आबादी के अनुणाचल में हिंदू 29.4 प्रतिशत, ईसाई 30.2 प्रतिशत और बौद्ध 11.7 प्रतिशत हैं। स्थानीय डोनियल पोलो मतावलंबी 26.2 प्रतिशत हैं। जनजातियों में निशी समुदाय प्रमुख है। इस चुनाव की एक और विशेषता यह है कि वेस्ट संसदीय क्षेत्र से सुश्री टोको शीतल भी भाग्य आजमा रही हैं। टोको को सन् 2022 में आयरन लेडी की ख्याति मिली थी, जब वह करीब दो हजार किमी का सफर तय कर सीमांत राज्य में भ्रष्टाचार पर ध्यानाकर्षण के लिये दिल्ली पहुंची थीं। उन्हें असम के गण सुरक्षा परिषद ने टिकट दी है। एक और अहम घटना यह है कि मेघालय के मुख्यमंत्री और नेशनल पीपुल्स पार्टी के नेता कॉमरेड संगमा ने ऐलान कर दिया है कि उनकी पार्टी इस चुनाव में हिस्सा नहीं लेगी, जबकि विगत चुनाव में उनकी पार्टी के पांच एमएलए चुने गये थे। माना जा रहा है कि एनपीपी के पलायन के पीछे नेपथ्य की घटनाओं का हाथ है। उसके नेता मुच्चु मिथी के बीजेपी ज्वाइन करने और कार्यवाहक अध्यक्ष लिखा साया के इस्तीफे उसी की परिणति है। बहरहाल, किरेन रिजिजू के लिये मुकाबला आसान नहीं है, क्योंकि नवाम टूकी अरुणाचल के मुख्यमंत्री रह चुके हैं और लौह महिला टोको के मैदान में उतरने से संघर्ष रोमांचक और त्रिकोणीय हो गया है। इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि अरुणाचल में कांग्रेस का अपना वोट बैंक है। वेस्ट और ईस्ट में क्रमशः 73 और 88 फीसद मतदान से निश्चित ही कयास लगाना कठिन हो गया है।

मेरे मस्तिष्क में चुनाव ही नहीं छाया रहता था

वर्ष 1937 में अंग्रेजों की सरकार ने राज्यों की असेम्बलियों के लिए चुनाव करने का फैसला किया। असेम्बलियों का चुनाव सीमित मतदाताओं के द्वारा किया जाना था। इस निर्णय के प्रति कांग्रेस और विशेषकर पंडित जवाहरलाल नेहरू की क्या प्रतिक्रिया थी, उन्होंने किस ढंग से कांग्रेस उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया, उन्होंने किस भाषा का उपयोग किया, उन्होंने अंग्रेज शासकों के प्रति दूर-दूर तक गाली गलौंच की भाषा का उपयोग नहीं किया। यहाँ हम नेहरू जी द्वारा उनकी प्रतिक्रिया और प्रचार की भाषा के बारे में जान रहे हैं। यह हम उनकी प्रसिद्ध किताब "डिस्कवरी ऑफ इंडिया" में दिया गया विवरण उद्धृत कर रहे हैं।

1937 में प्रांतीय असेम्बलियों के चुनाव का निर्णय लिया गया। असेम्बलियों को कुछ सीमित मतदाताओं द्वारा चुना गया था। एक मौटे अंदाज के अनुसार जनसंख्या के 12 प्रतिशत लोग ही चुनाव में भाग ले सकते थे। परंतु यह भी अपने आप में एक बड़ी बात थी। पूरे भारतवर्ष में 3 करोड़ लोग चुनाव में भाग लेने वाले थे। राज्यों में रहने वाले लोग चुनाव में भाग नहीं ले सकते थे। चुनाव का क्षेत्र बहुत विस्तृत था। राजा-महाराजाओं के क्षेत्र को छोड़कर लगभग सारे देश में बसे हुए लोग चुनाव में भाग लेने के लिए अधिकृत थे। हर प्रांत के लोगों को अपनी असेम्बली चुनना था। कुछ प्रांतों में असेम्बली के 2 सदन थे। चुनाव में भाग लेने वाले उम्मीदवारों की संख्या हजारों में थी। इस चुनाव के प्रति कांग्रेस और मेरा रवैया कुछ और ही था। मैंने उम्मीदवारों के प्रति विशेष ध्यान नहीं दिया। उसके स्थान पर मैंने इन चुनाव का उपयोग सारे देश में आज़ादी के लिए वातावरण पैदा करने के लिए किया। यही काम लगभग पूरी कांग्रेस ने किया। हमने अपने चुनाव घोषणा पत्र में आजादी की बात की थी। यदि हम आजादी के लिए वातावरण पैदा कर सके, तो कौन उम्मीदवार जीतता है और कौन हारता है, इससे कोई फरक नहीं पड़ेगा। मेरी अपील सिद्धांतवादी थी। अपने भाषणों में मैं अपनी आज़ादी की बात ही करता था और उम्मीदवार के प्रति किसी प्रकार का ध्यान आकर्षित नहीं किया। मेरा काम और वक्तव्य सिर्फ आज़ादी के लिए था। यद्यपि मैं कुछ उम्मीदवारों को जानता था परंतु अनेक उम्मीदवार ऐसे थे जिन्हें मैं नहीं जानता था और न जिन्हें जानने की मैंने कोशिश की। मैं सोचता था कि मैं इस तरह के सैंकड़ों नामों को याद करके अपने दिमाग को क्यों परेशान करूं। मैं कांग्रेस के लिए वोट मांगता था। मैं देश की आज़ादी के लिए वोट मांगता था। मैं आज़ादी के लिए संघर्ष जारी रखने के लिए वोट मांगता था। मैं किसी प्रकार का वायदा नहीं करता था। मैं सिर्फ मतदाताओं और उम्मीदवारों से यह अपेक्षा करता था कि वे आज़ादी प्राप्त होने तक अपना संघर्ष और अभियान जारी रखें। मैं लोगों से कहता था कि आप मुझे और कांग्रेस को और कांग्रेस के उम्मीदवारों को समझते हैं और हमारे कार्यक्रम और हमारे देश को जानते हैं, तो ही वो हमें वोट दें। मैं उनसे कहता था कि तुम्हारा काम कांग्रेस को उस हालत में वोट नहीं देना है जब तक कि आप कांग्रेस द्वारा प्रस्तावित उद्देश्य और कार्यक्रम के प्रति स्वयं को समर्पित नहीं करते हैं। मैं झूठ-मूठ के मत नहीं चाहता हूँ। मैं किसी विशेष व्यक्ति के लिए सिर्फ इसलिए वोट नहीं मांगता हूँ क्योंकि आप उसे पसंद करते हैं। इस तरह का मत हमें अपने उद्देश्य को हासिल करने में बिल्कुल मददगार सिद्ध नहीं होगा। हमें एक लंबी यात्रा पर जाना है। ये चुनाव और ये मताधिकार एक मंजिल को हासिल करने के लिए बहुत ही छोटा कदम है। हमें यह बात समझना चाहिए। यदि हम यह नहीं समझते हैं तो हम देश के भविष्य के लिए संघर्षरत नहीं हैं। व्यक्तियों का कोई महत्व नहीं है, यदि वह इन उद्देश्यों को नहीं जानता है। वैसे हमारी मंशा है कि हम जिन्हें चुनाव में खड़ा कर रहे हैं वे अच्छे इंसान हैं और वे हमारे उद्देश्यों के सच्चे प्रतिनिधि हैं। हम किस उद्देश्य और किस संगठन के लिए खड़े हैं? हम अपनी देश की आज़ादी के लिए मैदान में हैं। वह आज़ादी क्या है? उस आज़ादी का क्या मतलब है? ये हम, हमारे देश के करोड़ो देशवासियों को समझाना चाहते हैं। हम सिर्फ अपने शासकों में परिवर्तन नहीं चाहते हैं। यह परिवर्तन सिर्फ गौरे और काले का नहीं होगा, यह परिवर्तन सच्चे शासन का होगा, यह परिवर्तन जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए होगा। इस परिवर्तन का मूल उद्देश्य गरीबी और दरिद्रता को हटाना होगा। यह मेरे भाषणों का उद्देश्य होता था और इसी तरह मैं अपने को चुनाव प्रचार के लायक बना पाता था। मैं किसी व्यक्तिगत उम्मीदवार के बारे में चिंता करना उचित नहीं समझता था। उसका क्या हाल होगा, वह जीतेगा या हारेगा इससे मुझे कोई मतलब नहीं था। मैं सिर्फ चिंतित था हमारे मूल उद्देश्यों के प्रति। इस उद्देश्य में मेरा उम्मीदवार कितना सफल है इसका मूल्यांकन ही मेरी मुख्य चेतना थी। यही उद्देश्य और यही सिद्धांत कांग्रेसी सारे देश में फैला रहे थे और वे एक अत्यधिक ताकतवर तूफान के अनुसार जो समुद्र से उठता है सारे देश में फैल रहे थे। इस महान तूफान में बाकी छोटी-मोटी चीजें लगभग समाप्त हो जाती थीं। मैं अपने लोगों को जानता हूँ और उन्हें खूब चाहता हूँ, उनकी करोड़ों आंखे मेरी आँखों से मिली रहती हैं और मैं इस आदान-प्रदान से भीड़ का मनोविज्ञान समझता था।

चुनाव और नेहरू

एल.एस. हरदेनिया

– संयोजक, ऑल इंडिया सेक्युलर फोरम

मैं चुनाव के बारे में दिनभर चर्चा करता रहता था। परंतु सिर्फ चुनाव ही मेरे मस्तिष्क में नहीं छाया रहता था। वे कृत्रिम रूप से मेरे मस्तिष्क में छाए रहते थे। वहीं दूसरी तरफ मैं मतदाताओं के उद्देश्य के प्रति चिंतित नहीं रहता था। सच पूछा जाए तो मैं हमेशा एक महान उद्देश्य के प्रति सोचता था। मैं अपने देश के करोड़ों लोगों के प्रति सोचता था। मैं उनके प्रति, उनके भविष्य के प्रति चिंतित रहता था। भले ही उन्हें मताधिकार था या नहीं। मैं देश के हर भारतीय पुरूष, महिला और बच्चे के प्रति चिंतित रहता था। मैं करोड़ों लोगों के भविष्य के प्रति चिंतित रहता था। सच पूछा जाए तो मैं करोड़ों देशवासियों की आँखों में झाँकता रहता था। वे मुझे अपरिचित नहीं लगते थे। मुझे ऐसा लगता था कि मैं सदियों से उन्हें जानता हूँ। मैं जब उन्हें नमस्कार करता था तो मुझे लगता था कि मेरे नमस्कार के उत्तर में हजारों नमस्कार मेरे दिल में कर रहे हैं। जब मैं उन्हें नमस्कार करता था तो लाखों नमस्कार जैसे कोई जंगल हो उठ जाते थे और हम और उनके चेहरों पर इतनी गहरी मुस्कुराहट आती थी जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते। ऐसा लगता था कि मैं उनसे लगातार बात कर रहा हूँ और मेरी आवाज़ उनकी आत्मा को छू रही है और मेरा संदेश उनके मस्तिष्क को हिला रहा है। मैं नहीं जानता कि वे कुछ हद तक मेरे शब्दों और मेरे विचारों को समझ पाते थे। परंतु मुझे इस बात का पूरा भरोसा था कि उनकी आँखें और उनका हृदय मेरी बात को समझ रहा था जो शायद बोले गये शब्दों से भी काफी जोरदार था।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

लेखक युवा व्यंग्यकार हैं।

...निबंध लिखोगे प्यारे

उधर पुणे की एक युवा दंपत्ति एक्सीडेंट में जान गंवा चुके थे। यह सुनकर निबंध विधा का गम और बढ़ गया। वह बड़बड़ाने लगा, 'अब तो लोग अपनी जान बचाने के लिए भी निबंध लिखने लगे हैं। गाड़ी चलाते समय मोबाइल पर निबंध पढ़ना पड़ता है। क्या जमाना आ गया है!'

कहानी, जो स्वभाव से हमेशा रोचक और मनोरंजक रहती है, ने निबंध को सांत्वना देने की कोशिश की, 'अरे, क्यों दुखी हो रहे हो। तुम्हारे बिना तो हमारी दुनिया अधूरी है। सोचो, अगर दुनिया में निबंध न हो तो विद्यार्थियों को कैसे पता चलेगा कि गर्मियों की छुट्टियों में उन्होंने क्या किया? परीक्षा में क्या लिखेंगे?'

कविता, जो हर बात को छंदों में कहने की आदत से मजबूर थी, ने कहा, 'देखो, निबंध भाई, हर विधा का अपना महत्व है। तुमसे बच्चों को सिखाया जाता है कि अनुशासन क्या होता है। बिना तुम्हारे, वे अपने विचारों को कैसे संजोएंगे?'

नाटक, जो हर समय किसी न किसी ड्रामे में व्यस्त रहता था, ने भी कहा, 'देखो निबंध, तुम्हारे बिना हम सब अधूरे हैं। लोग नाटक की समीक्षा लिखते हैं, कविताओं पर टिप्पणियाँ करते हैं, कहानियों का विश्लेषण करते हैं। ये सब तुम्हारे बिना संभव नहीं है।'

निबंध विधा ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा, 'यह सब बातें तो ठीक हैं, पर अब तो लोग दुर्घटनाओं में भी मुझे घसीटते हैं। वह पुणे का युवा दंपत्ति, क्या सोचा होगा उन्होंने जब गाड़ी चलाते-चलाते मोबाइल पर निबंध पढ़ रहे थे? वह भी इतना ध्यान से कि गाड़ी ही ठोक दी!'

कहानी ने मजाकिया अंदाज में कहा, 'अरे, तुम भी कमाल करते हो निबंध भाई! क्या उन्होंने गाड़ी को ठोकने के लिए ही तुम्हारा निबंध पढ़ा था? देखो, यह तो उनकी अपनी गलती है। तुम अपना मन छोटा मत करो।'

कविता ने भी हँसते हुए कहा, 'और क्या! सोचो, अगर उन्होंने मेरे छंद पढ़े होते तो शायद उनका ध्यान रास्ते पर रहता। तुम्हारे निबंध की लंबी-लंबी पंक्तियों में वे खो गए होंगे।'

नाटक ने ठहाका मारते हुए कहा, 'हाहाहा! तुम दोनों तो बड़े मजेदार हो। असल में, निबंध भाई, तुम महान हो। लोग तुम्हें हर जगह पढ़ते हैं, और यह उनकी गलती है कि वे गाड़ी चलाते समय भी पढ़ते हैं।'

निबंध विधा का चेहरा अब कुछ-कुछ खिलने लगा था। उसने मुस्कराते हुए कहा, 'शायद तुम लोग ठीक कह रहे हो। मुझे अपने महत्व को समझना चाहिए। आखिरकार, बिना मेरे, इन सबकी दुनिया अधूरी है। और हाँ, पुणे के उस युवा दंपत्ति को भी शायद अब समझ में आ गया होगा कि गाड़ी चलाते समय सिर्फ़ ड्राइविंग पर ध्यान देना चाहिए, न कि निबंध पढ़ने पर।'

इस प्रकार, निबंध विधा का मन हल्का हुआ। कहानी, कविता, और नाटक ने उसे यह एहसास दिलाया कि वह भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना वे सब। और अगर कोई अपनी गलती से दुर्घटनाग्रस्त हो जाए, तो इसका मतलब यह नहीं कि निबंध विधा को दोषी ठहराया जाए।

इसके बाद, कहानी ने निबंध की तरफ देख कर कहा, 'अब सुनो, निबंध भाई, यह वक्त का तकाजा है कि हमें एक दूसरे की मदद करनी पड़ेगी। अब लोग हमें भले ही अनदेखा करें, पर हम जानते हैं कि हमारी जरूरत क्या है। तुम तो विधाओं के मुखिया हो, तुम्हें अपना सर उठाकर चलना चाहिए।'

कविता ने समर्थन में कहा, 'बिल्कुल सही, निबंध भाई! तुम्हारे बिना कोई भी परीक्षा अधूरी है। बच्चे तुम्हें पढ़कर ही जीवन के सबक सीखते हैं। तुम्हारी महत्ता अटूट है।'

नाटक ने अपनी नाटकीयता को छोड़कर गम्भीर होते हुए कहा, 'यह सत्य है। हम सबको मिलकर अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़नी होगी। और निबंध, तुम्हें इसका नेतृत्व करना होगा।'

निबंध ने एक गहरी सांस ली और कहा, 'ठीक है, दोस्तों। अब मैं अपने आपको कमजोर नहीं समझूंगा। हमें मिलकर इस दुनिया में अपनी जगह बनानी है।'

प्रेरणा

विवेक रंजन सिंह

लेखक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के विद्यार्थी हैं।

खुद को 'बेकार' कहने वाले प्रोफेसर से कुछ तो सीखिए

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग से रिटायर्ड प्रोफेसर नरसिंह बहादुर सिंह को लोग उनके नाम से कम हरियाली गुरु व स्नेक मेन के नाम से ज्यादा जानते हैं। विश्वविद्यालय में जब तक रहे परिसर में पेड़ लगाकर उसे हरा-भरा करते रहे। आज लोग पद के पीछे भागते हैं, संस्थानों में बड़े पदों पर आसीन होने के लिए जद्दोजहद करते हैं मगर प्रोफेसर साहब गार्डन इंचार्ज ही बने रहे। जब तक कक्षाएं रहतीं तब तक पढ़ाते उसके बाद खुरपी फावड़ा लिए परिसर में बागवानी करते दिखते। छुट्टियों में शहर निकल जाते या फिर सुदूर किसी गांव या संस्थान में जाकर पर्यावरण के प्रति जागरूक करते।

कभी आपने सुना है कि अच्छी खासी तनख्वाह पाने वाला एक प्रोफेसर अपने आप को 'बेकार' कहता है। ये प्रोफेसर साहब जीवन भर साइकिल से चले और अब घूम घूमकर पेड़ लगाते हैं। वे अपनी साइकिल को किसी फरारी से कम नहीं मानते। जहां भी जाते हैं साइकिल के आगे लगे बास्केट में पेड़ और झोले में बीज रखते हैं। शादी हो या फिर कोई भी आयोजन,पेड़ को उपहार स्वरूप भेंट करते हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग से रिटायर्ड प्रोफेसर नरसिंह बहादुर सिंह को लोग उनके नाम से कम हरियाली गुरु व स्नेक मेन के नाम से ज्यादा जानते हैं। विश्वविद्यालय में जब तक रहे परिसर में पेड़ लगाकर उसे हरा भरा करते रहे। आज लोग पद के पीछे भागते हैं, संस्थानों में बड़े पदों पर आसीन होने के लिए जद्दोजहद करते हैं मगर प्रोफेसर साहब गार्डन इंचार्ज ही बने रहे। जब तक कक्षाएं रहतीं तब तक पढ़ाते उसके बाद खुरपी फावड़ा लिए परिसर में बागवानी करते दिखते। छुट्टियों में शहर निकल जाते या फिर सुदूर किसी गांव या संस्थान में जाकर पर्यावरण के प्रति जागरूक करते। आज भी जूट के एक झोले में घूम घूमकर बीज इकट्ठा करते हैं और साथ में पानी पीने का एक बोतल रखते हैं। उनके पास आज तक कोई गाड़ी नहीं है। उनका कहना है कि उनके पास कोई कार नहीं है इसलिए वो 'बेकार' हैं। अपनी साइकिल को बी एम डब्लू कहते हैं। बी एम डब्लू से उनका तात्पर्य है 'बेकार मेन वाकर'।

ऐसे शख्स की कहानी सुनना आज के समय में लोगों के लिए पागलपन का काम है क्योंकि ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण की बातें सिर्फ बंद कमरों की हैं,उनको जमीन पर उतारने के लिए खुद जमीन पर उतरना पड़ता है, ये बात शायद हम भूल चुके हैं। प्रोफेसर सिंह का यह जुनून आज हजारों लोगों के लिए प्रेरणादायक बना हुआ है। उन्होंने अब तक करीब दो लाख से ज्यादा पेड़ लगाए हैं। वो आपको शहर की सड़कों के किनारे पेड़ लगाते मिल जाएंगे या उन्हें सींचते हुए। शुरू के समय में जब छात्र उनसे मिलते तो उन्हें माली समझ बैठते और उनसे वैसा ही व्यवहार करते। मगर प्रोफेसर साहब कभी भी इस बात का बुरा नहीं मानते।

हरियाली गुरु के नाम से मशहूर प्रोफेसर सिंह मूल रूप से सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश) जिले के बिकना गांव के रहने वाले हैं। प्रोफेसर बनने से पहले भी उन्हें पेड़ लगाने का काफी शौक रहा है। वो पेड़ों को धरती पर रोपने के लिए हमेशा से ही उत्सुक रहते आए हैं जो कि आज तक जारी हैं। उनके इस कार्य में उनकी पत्नी मिथिलेश सिंह भी उनका हमेशा साथ देती रही हैं। गर्मी के समय में जब ज्यादातर घरों में ए.सी. चलती है तो सिंह साहब कूलर और पंखे से ही काम चलाते हैं। कूलर की हवा उनके लगाए सुगंधित पुष्पों की महक को उनके घर में बिखेर देती हैं जिसे उनका पूरा घर सुगंध से भरा रहता है। खुद सब्जियों को भी उगाने का काम करते हैं और बाजार जाते समय एक झोला ले जाते हैं। किसी भी प्रकार की पॉलिथिन का प्रयोग न वो करते हैं और न ही अपने परिवार में किसी को करने देते है। जितना हो सकता है छात्रों और सगे संबंधियों को भी इसके लिए जागरूक करते हैं।

आज के समय में पर्यावरण के प्रति प्रेम बस संगठन, संस्था आदि बनाकर सिर्फ जागरूकता अभियान और वृक्षारोपण कर तस्वीर खिंचाने भर का रह गया है। हमें यह मानना पड़ेगा कि हम सिर्फ़ बातें कर रहे हैं और लोगों को सिखाने और जागरूक करने में ज्यादा लगे हैं, बजाय इसके कि खुद जमीन पर उतरकर बिना किसी दिखावे के काम करने के। ग्लोबल वार्मिंग का ऐसा आलम है कि साल दर साल गर्मी बढ़ती ही जा रही है। देश में बड़े-बड़े जंगलों को बिजली के लिए, खनिज संसाधनों के लिए आंख मूंदकर काटा जा रहा है और उसके एवज में झाड़ी जैसे पेड़ लगाकर सरकारे इतरा रही हैं। प्रोफेसर साहब ज्ञान देने में ज्यादा विशेष रुचि नहीं रखते बल्कि खुद फावड़ा उठाकर पेड़ लगाना शुरू कर देते हैं। वे पेड़ लगाने का सही तरीका भी बताते हैं। वरना पेड़ तो हर साल वन विभाग लाखों लगवाता है मगर उसमे बचते कितने हैं? इसलिए उनका मकसद सिर्फ पेड़ लगाना नहीं बल्कि उसको सही तरीके से लगाकर उसको आगे तक बचाकर रखना, जब तक कि वह प्रकृति से खुद अपना पोषण न प्राप्त करने लगे।

प्रोफेसर साहब अब तो रिटायर हो गए हैं मगर ये जुनून कम नहीं हुआ बल्कि और बढ़ गया है। जब वो विश्वविद्यालय में थे तो अन्य शिक्षक उनका उपहास उड़ाते थे मगर अपनी कार और गाड़ी को प्रोफेसर सिंह के लगाए पेड़ों के नीचे ही आराम कराते थे। हमारा समाज दिन के दिन ऐसा ही बनता जा रहा है। वो पेड़ काटते हुए थक जाने पर पेड़ के नीचे ही आराम कर रहा है। ग्लोबल वार्मिंग की बात वो वातानुकूलित कमरों में बैठ कर करता है और फिर अपनी वातानुकूलित कार के बैठ अपने घर जाता है। आज का दौर बात करने का दौर होता जा रहा है। बातें खूब हो रही हैं, काम कोई नहीं करना चाह रहा हैं। 'कैसे' पर बात करने वाले 'ऐसे' पर बात नहीं करना चाहते। प्रोफेसर नरसिंह बहादुर सिंह घूमकर सिर्फ ये बात नहीं करते कि पेड़ कैसे लगाए जाए? तलाब कैसे बनाए जाए? पर्यावरण कैसे बचाया जाए? बल्कि वो करके दिखाते कि पेड़ ऐसे लगाया जाता है। तलाब ऐसे खुदाया जाता है।

सिंह साहब को सिर्फ पेड़ लगाने का ही नही बल्कि वन्य जीवों को भी बचाने के लिए जाना जाता है। दुर्लभ जीवों को, जिन्हे लोग अंधश्रद्धा या अंधविश्वास के चलते मार देते हैं, प्रोफेसर साहब उन जीवों को बचाने के लिए खुद मोर्चा संभालते हैं। जहां से भी उन्हें सूचना मिलती है कि सांप या अजगर निकला है और लोग उसे नुकसान पहुंचा सकते हैं , वो साइकिल लेकर निकल पड़ते हैं और रेस्क्यू कर उसे खुद जंगल में छोड़ने जाते हैं। इस समय गौरैया को बचाने के लिए वे लकड़ी के छोटे-छोटे घर बनवाकर उन्हें लोगों के बीच बांटने में लगे हैं।

प्रोफेसर सिंह की तीन बेटियां और एक बेटा है। दो बेटियां अमेरिका में रहती हैं। उनके दामाद भी साइकिल से चलते हैं। बच्चे भी साइकिल से चलने को प्राथमिकता देते हैं। कुल मिलाकर उनका पूरा परिवार पर्यावरण के प्रति समर्पित है। सिंह साहब का व्यक्तित्व प्रभावशील है जिससे हमें सीख लेने की जरूरत है। आज के समय में प्रकृति को बचाने का बीड़ा उठाए ऐसे लोगों की हमें सख्त जरूरत है। हमें अपनी उन पीढ़ियों से भी सीखने की जरूरत है जो हमारे आपके जितना पढ़ी लिखी तो नहीं थीं मगर जल, जंगल और जमीन के प्रति उनकी सोच हमारे आपसे कई गुना प्रगतिशील थी। आज हम अपने नैतिक और सामाजिक दायित्वों से दूर भागने वाली पीढ़ी बन रहे हैं। हमे पढ़ाई लिखाई के साथ जमीनी स्तर पर प्रैक्टिकल होना पड़ेगा। हमें यह समझना होगा कि बातें करने से काम नहीं चलने वाला बल्कि खुद से योगदान भी करना होगा। कंकरीट बनती दुनिया में कुछ ऐसा करना होगा जो भविष्य में हमारे जीवन को भी बचा पाए। हमने अपनी शौक पूरा करने और सामाजिक प्रतिष्ठा बनाने के चक्कर में बहुत कुछ नाश कर दिया है, ये बात जल्द से जल्द समझनी होगी, वरना आने वाली पीढ़ियां पानी और हवा के लिए जूझते हुई दिखाई देंगी। हमें साफ पानी और साफ हवा के लिए प्रतिबद्ध होना पड़ेगा। सिर्फ अपने लिए नहीं बल्कि भविष्य के लिए सोचकर चलना होगा। प्रोफेसर सिंह के कार्य व्यवहार से हमें भी सीखने की जरूरत है। नौकरी करने का उद्देश्य सिर्फ पैसा कमाना नहीं होना चाहिए बल्कि हजारों लाखों के लिए कुछ ऐसा कर जाना भी है जिससे आने वाली पीढ़ियां आपके कर्म और व्यक्तित्व से प्रेरणा लें।

मुद्दा

चन्दन यादव

लेखक इकतारा के सहायक संपादक हैं।

क्या स्कूल सीखने की इकलौती जगह है ?

कक्षा 5 की बात है। उस समय अध्यापक को हम पंडिजी कहा करते थे। मैं एक सरकारी स्कूल में पढ़ता था। पंडिजी ने अशोक को खड़ा किया। और हिन्दी की खुली हुई किताब उसके हाथ में देते हुए कहा, ये पढ़कर सुना।

अशोक को पढ़ना नहीं आता था। वह पहले ही शब्द के अक्षरों के हिज्जे करता रहा। पर जोड़कर शब्द नहीं बोल सका। पंडिजी ने तंज किया, चल बैठ जा। तू तो मच्छी पकड़कर भी गुजारा कर लेगा। (एक दलित जाति) के लड़के को पढ़ाई से क्या काम?

1970 की बात है। इसलिए पक्का नहीं है कि पंडिजी ने सचेत रहकर ये कहा था या अवचेतन में जाति विशेष के बारे में बनी धारणा के कारण।

अब तो हिन्दू हित में ऐसा खुलेआम किया जा रहा है। सोचेंगे तो आपको भी इससे मिलते-जुलते उदाहरण याद आ जाएँगे।

मसला यह है कि अध्यापक की बातों में सिर्फ कक्षा की विषयवस्तु ही नहीं होती, सामाजिक राजनीतिक मसलों पर उनकी निजी राय भी होती है। कई बार ऐसी राय या टिप्पणी, समता या न्याय और बंधुत्व के विरुद्ध होती है! साम्प्रदायिक या जातिवादी हो सकती है! या महिला और दलित विरोधी भी! आखिर अध्यापक भी हमारे तुम्हारे बीच से निकले भारत के नागरिक ही हैं!

चिन्ता की बात यह है कि बच्चे अपने अध्यापकों की बात पर अंधविश्वास करते हैं। वो मानते हैं कि मैडम/सर ने कहा है तो सच है।

इससे यह सवाल उठता है कि ऐसा कैसे हो गया कि स्कूल ज्ञान के अधिकृत उत्पादक और वितरक हो गए? और क्या जो हुआ वह ठीक है?

हमारे आसपास लोग तरह तरह के काम करते हैं। गौर कीजिए कि लोहार, सुतार, कुम्हार और तरह-तरह के शिल्पी, किसान और पशुपालक वे समूह हैं जो औद्योगीकरण से पहले सारी दुनिया में अर्थव्यवस्थाओं की रीढ़ थे। अगली पीढ़ी के लोग इन्हीं से सीखते थे। यही शिक्षा भी थी और आजीविका भी।

स्कूली शिक्षा के लोककव्यापीकरण ने इसे पलट दिया। स्कूली पढ़ाई (कॉलेजेस भी) से मिली डिग्री नौकरी का आधार बन गई। योग्यता का मापन इसी से किया जाने लगा कि कहाँ तक, और क्या पढ़ाई की है। इस बदलाव को हम 'ज्ञान का संस्थानीकरण' कह सकते हैं।

ज्ञान के इस संस्थानीकरण के चरित्र को समझने की ज़रूरत है। औद्योगीकरण के पहले के किसी भी काम को देखिए। लकड़ी की चीज़े बनाने के काम सुतारी को ही लीजिए, इसमें गणित, शिल्प, भौतिकी जाहिर तौर पर शामिल है। और बनाई हुई चीज़ें बेचने के लिए समाज विज्ञान और मनोविज्ञान भी। स्कूल ने इसे विषयों में बाँट दिया। और कुछ हद तक यह भी नहीं बताया कि गणित और भौतिकी सीखकर क्या करें?

स्कूल व्यवस्था ने यह भी तय किया कि अलग-अलग विषयों में से भी क्या पढ़ाया जाएगा और क्या छोड़ दिया जाएगा। समय और मात्रा की सीमा को देखते हुए यह अपरिहार्य भी है।

स्कूल ने यह भी तय किया कि एक कक्षा के सब बच्चों के लिए एक जैसी विषय वस्तु होगी। बड़े पैमाने पर परीक्षा आयोजित करने के लिए यह ज़रूरी है। इसके बिना परीक्षाएँ आयोजित नहीं की जा सकतीं।

स्कूल में किसान, मज़दूर, सुतार, लोहार, जुलाहा, कुम्हार, वैद्य, हकीम, मैकेनिक, हलवाई, पंसारी सबके बच्चे को एक जैसा मानकर एक ही चीज़ सिखाई जाती है। अगर किसी को अपना पारम्परिक पेशा अपनाना है तो उसे अपने घर में ही सीखना होगा। स्कूल और कॉलेज मोटे तौर पर सब बच्चों को दूसरों के यहाँ नौकरी करने के लिए तैयार करते हैं।

आप क्या-क्या जानते हैं यह जांचने के लिए अब कोई यह नहीं पूछता, 'क्या आप धान की बुआई कर सकते हैं?'

क्या आप कार के सारे पुर्जे खोलकर वापिस लगा सकते हैं?

शहद का छत्ता तोड़ सकते हैं?

पेड़ पर चढ़ सकते हैं?

कपड़ा बुन सकते हैं?

पूछा यह जाता है कि आपने क्या पढ़ाई की है? स्कूल अब सीखने की एकमात्र जगह के रूप में रूढ़ हो गये हैं। आप इसे अच्छा समझें या खराब, स्कूल व्यवस्था की यही रीढ़ है।

वास्तव में तो हम बहुत से कौशल और ज्ञान स्कूल के बाहर से अर्जित करते हैं। पर स्कूल को ही सीखने की अधिकृत जगह मानकर और ऐसा दर्शाकर हमने सीखने की संभावनाओं को सीमित कर लिया है। खासकर अपने बच्चों के लिए। हमें, और स्कूल को भी अपने बच्चों को यह भी बताना चाहिए कि समझ और ज्ञान के मायने क्या हैं। बच्चों को बताया जाना चाहिए कि सीखना एक निरन्तर चलती रहने वाली और अपडेट होती रहने वाली चीज़ है। हम कभी भी किसी भी चीज़ के बारे में यह नहीं कह सकते कि मैं सब जानता हूँ। यह किसी मंज़िल तक पहुँचने की तरह नहीं है। सीखना कुछ-कुछ वैसा ही निरन्तर है जैसे हमारी नसों में बहता हुआ रक्त। जैसे हमें हर समय बोध नहीं होता रहता कि नसों में रक्त बह रहा है, वैसे ही सीखना भी चलता रहता है। इसकी कोई तयशुदा जगह और समय नहीं हो सकते।

यकीन मानिये ऐसा मानने और बताने से स्कूल को कोई नुकसान नहीं होगा। उल्टे वो एक सहज जगह बन सकेंगे। बच्चों और अध्यापकों के रिश्ते अनौपचारिक हो सकेंगे। और अध्यापक वो बन सकेंगे जो उनसे शिक्षा की पाठ्यचर्या 2005 में अपेक्षित है, बच्चों के लिए ज्ञान के सहनिर्माता।

दृष्टिकोण

सुधीर मोता

लेखक स्तंभकार हैं।

भला उम्र का सयाना होने से क्या मतलब ?

हमारे अपने घर मे हमने बच्ची को संभालने एक बालिग लड़की को रख लिया था उसने बहाना कर छुट्टी ली और एवजी में कुछ दिन एक नाबालिग को रख दिया । हमने सोचा अपनी बच्ची इसके संग खेलती रहेगी । खेल कुछ अलग ही बन गया। नाबालिग हाथों ने बालिग के सिखाये अनुसार घर से कुछ कीमती सामान पर हाथ साफ कर दिया । पुलिस ने कहा ये हाथ नाबालिग हैं इसलिये कुछ नहीं हो सकता। उधर मामले से जुड़े एक अफसर कुछ अधिक ही बालिग थे सो एक से अधिक घर बार संभालने के फेर में ऐसा बचपना कर बैठे कि अपनी ही कनपटी पर बंदूक रखते रखते दुनिया से रूखसत हो गये, आज तक पता नहीं चल सका कि हमारे वो जेवर अब कौन पहन रहा । हम बचपना किये और भरोसे की पिच पर इस तरह बोल्ड होते रहे कि किसी अपने ने ही रन आउट भी करवाया और कैच भी करवा दिया। अगर हम बड़े हो चुके होते तो क्या ऐसा हो सकता था ?

अब तो हमें भी भरोसा है अगर हम कुछ कर भी गुजरें तो अपने बहुत से अपराधों में नाबालिग होने के आधार पर बरी हो जायेंगे। पर मुश्किल ये है कि वे उम्र को आधार मानते हैं। हम पूछते हैं भला उम्र का सयाना होने से क्या मतलब? कितने बचकाने हैं हम। दुनिया इतनी आगे बढ़ गई, पर अपन ठुठ के ठुठ रहे । अगर डिटेल में कहते गये तो आप कहोगे ये तो जलकुकड़ापन सा लग रहा। आपने वो गाना सुना और पसंद किया ही है..सब कुछ सीखा हमने ना सीखी होशियारी, सच है दुनिया वालों हम हैं अनाड़ी। अब ये क्या है ? है तो यह भी वही जो हम कह रहे पर ये बात गा कर कहो तो गले उतर जाती है कोई अदरवाईज़ नहीं लेता, बल्कि वाह वाह करता है। अपन ने अपने गले का शुरू से ही ध्यान नहीं रखा सो कभी अच्छा गा नहीं सके, गर्दन की तरफ भी ध्यान नहीं दिया सो कुछ ज्यादा ही लचीली हो गई ये सुराही। मतलब सुर और सुराही दोनों मामलों में अपनी उम्र कम। पकाव में कसर रह गई। उस पर नाम भी कुछ मिलता जुलता अपना।

हमारे अपने घर मे हमने बच्ची को संभालने एक बालिग लड़की को रख लिया था उसने बहाना कर छुट्टी ली और एवजी में कुछ दिन एक नाबालिग को रख दिया । हमने सोचा अपनी बच्ची इसके संग खेलती रहेगी। खेल कुछ अलग ही बन गया। नाबालिग हाथों ने बालिग के सिखाये अनुसार घर से कुछ कीमती सामान पर हाथ साफ कर दिया। पुलिस ने कहा ये हाथ नाबालिग हैं इसलिये कुछ नहीं हो सकता। उधर मामले से जुड़े एक अफसर कुछ अधिक ही बालिग थे सो एक से अधिक घर बार संभालने के फेर में ऐसा बचपना कर बैठे कि अपनी ही कनपटी पर बंदूक रखते रखते दुनिया से रूखसत हो गये, आज तक पता नहीं चल सका कि हमारे वो जेवर अब कौन पहन रहा। हम बचपना किये और भरोसे की पिच पर इस तरह बोल्ड होते रहे कि किसी अपने ने ही रन आउट करवाया और कैच भी करवा दिया। अगर हम बड़े हो चुके होते तो क्या ऐसा हो सकता था?

हम अपने नाबालिग होने की बात कर रहे थे, कोई ये भी सोच सकता है कि नेक नहीं हमारे इरादे। किसी वारदात का इरादा है। अब क्या बतायें, हम अपने बारे में भी सदा से ये ही सोचते रहे कि कुछ वारदात कर गुजरने ही वाले हैं और आपकी तरहा हमारी भी सोच गलत निकलती रहती है। अब ये आपका सयानापन तो हुआ क्योंकि आपने पुलिस की तरह सोचा पर हम तो अपराधी की तरह सोचते रहे और इसी करके कुछ कर ना सके और अपने कटघरे में खड़े रहे सो अलग। लंबी टेम तक अपने ही कटघरे में रहो तो वो वह किसी अंधेरी कोठरी की तरहा लगने लगता है जिसमें खिड़किया बेशुमार होती हैं पर उजेला नहीं आता। ये खिडकियां एक तरफा होती हैं, लोगों के आपकी तरफ झांकने के काम आती हैं। अब किसी सयाने के कमरे में कोई झांक सकता है भला ? किसी बच्चे की तरफ देखो, ताको तो उल्टे बढ़ावा मिलता है। मां बाप खुश होते हैं। देखो बेटा अंकल आपसे मिलने आये हैं, अंकल को हगी करो, पप्पी दो । पोयम सुनाओ वगैरा। सो लोगों से अपनी तरफ झंकवाते और अपने में झांकते हुए चल रहा अपना। इस तरह अपनी रामकथा बालकांड के एक अनंत अध्याय की तरह लंबाती जा रही। अब ये संयोग भर ही है कि ऐसे लोगों के जीवन ग्रंथ में वनवास और युद्ध की कथा ही अधिक हुआ करती है।

हम विद डयु एपोलोजी कहे दे रहे हैं कि हाल में एक नाबालिग के हाथों घटी दुर्घटना पर व्यंग्य नहीं है यह, अपने आप पर है। अपने बहाने हम ये कहना चाह रहे कि बालिग नाबालिग को उम्र से क्यों मानो हो। वो बच्चा इतनी पॉवर, पैसा और मोटर ले कर घर से निकला उसे नाबालिग कैसे मानते हो? हां उसके मां बाप को मानो और माफ कर दो उनके बचपने के लिये। निबंध उबंध भी लिखवा लो। वो ही हैं सच्चे नाबालिग। उनके बेटे ने सयानों की तरह पैसे मांगे और कार भी। पिता ने बच्चे की तरह कार और कार्ड उसके हवाले कर दिये। आगे का सब को पता ही है। देखिये, हम अपनी बात करते करते कहां पहुंच गये। हमारा प्रकरण कुछ इस तरह है कि पिताजी ने खर्च के मामले में जब तक हम पचपन के ना हो गये, हमें बचपन में ही माना। खुद पिताजी बचपन इसलिये नहीं देख पाये कि उनके पिता जल्दी चले गये सो उन्होंने खेलने की उम्र में दिशायें खोलीं, और आकाश छुआ। हमारे पास पिता मां दादी और बहनें सब थे सो बचपन की नदी में जी भर तैरे। इसके बाद हमें बचपन की आदत हो गई। जैसे सदा सुहागन की तरहा सदा बचपन की दुआ मिली हो हमें। अब हाल ये है कि पूछे बिना कुछ काम नहीं कर पाते। खर्च की आदत भी बचपन जैसी ही है । दिल मांगता जाता है पर मन का मोर अपने दायरे में ही रहता है, पंख जो इतने भारी हुए।

देखिये, बात बढ़ाने से कोई फायदा नहीं हम ने पूरा खात्री कर के ही अपने को नाबालिग साबित किया है। निबंध उबंध तो हम अग्रिम में ही लिखते चले आ रहे, यूं सज़ा की बात करें तो अपने खाते उल्टे जमा ही निकलेगी। उम्र तो मात्र एक नंबर है ये बात बहुत से सयानों ने कही है। आप ना माने तो आप भी बच्चे ही हैं । आ जाईये जो थोड़ा-सा वक्त बच्चा है, माफ कीजिये, जो बचा है वह हमारे साथ खूब गुज़रेगा।

मतगणना स्थल पर 200 मीटर के दायरे में धारा 144 : कलेक्टर

● 3 जून शाम 6 बजे से 5 जून सुबह 8 बजे तक रहेगी प्रभावशील

बैतूल। लोकसभा निर्वाचन 2024 के अनुक्रम में बैतूल के जयवंती हॉक्सर शासकीय महाविद्यालय में मतगणना की जाएगी। मतगणना स्थल परिसर जयवंती हॉक्सर शासकीय महाविद्यालय के 200 मीटर क्षेत्र में धारा 144 की घोषणा की गई है। निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण मतगणना प्रक्रिया के निष्पादन के अनुक्रम में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी द्वारा दंड प्रक्रिया संहिता में प्राप्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए मतगणना स्थल पर धारा 144 लागू की गई है। यह आदेश 3 जून 2024 को सायं 6 बजे से 5 जून 2024 को प्रातः 8.00 बजे तक प्रभावशील रहेगा।

इस अवधि में प्रतिबंधित क्षेत्र मतगणना स्थल से 200 मीटर त्रिज्यीय दूरी में कोई भी व्यक्ति बिना परिचय पत्र वैध आदेश के मतगणना परिसर में प्रवेश नहीं करेगा। मतगणना स्थल पर सिर्फ

पास धारक अधिकृत व्यक्ति ही प्रवेश करेंगे। मतगणना स्थल से 200 मीटर त्रिज्यीय दूरी तक अधिकृत वाहनों को छोडकर समस्त वाहनों का आवागमन पूर्णतरू प्रतिबंधित होगा।

मतगणना केंद्र से 200 मीटर की परिधि में कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार का घातक हथियार जैसे चाकू, लाठी तलवार, आग्नेय अस्त्र, विस्फोटक पदार्थ इत्यादि लेकर प्रवेश नहीं कर सकेगा। यह प्रतिबंध सुरक्षा कर्मियों, पुलिस एवं ऐसे विशेष पुलिस कर्मियों तथा शासकीय अधिकारियों पर लागू नहीं होगा जिनकी सेवाएं मतगणना के दौरान शांति एवं सुरक्षा के लिए लगाई गई हैं।

मतगणना स्थल पर धूम्रपान मद्यपान, गुटखा पाउच जैसे अन्य मादक पदार्थ प्रतिबंधित किए गए हैं। मतगणना परिसर में किसी भी अनाधिकृत व्यक्ति द्वारा वीडियोग्राफी अथवा फोटोग्राफी भी प्रतिबंधित रहेगी। निर्वाचन आयोग से अनुमति प्राप्त व्यक्तियों को छोडकर मतगणना स्थल में किसी भी व्यक्ति द्वारा मोबाइल आईफोन, आईपैड, लैपटॉप, इत्यादि भी प्रतिबंध रहेगा। आदेश का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध धारा 188 के अंतर्गत कार्रवाई की जावेगी।

वरिष्ठ समाजसेवी व पत्रकार पं. के.के. अग्निहोत्री का देहावसान

बैतूल। भौंरा के वरिष्ठ पत्रकार कैलाश प्रसाद (के.पी.) अग्निहोत्री के बड़े भाई, अग्रणी सामाजिक कार्यकर्ता और पत्रकार पं. कृष्णकुमार (के.के.) अग्निहोत्री का आज सोमवार 27 मई की प्रातः भोपाल में देहावसान हो गया। श्री कृष्ण कुमार जी पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। उनकी अंतिम इच्छानुसार उनका अंतिम संस्कार सोमवार दोपहर तीन बजे महाकाल की नगरी उज्जैन के रामघाट में किया गया। ईश्वर से यही कामना है कि वह दिवगत आत्मा को अपने श्री चरणों मे स्थान व शांति प्रदान करे तथा शोक संतपत अग्निहोत्री परिवार को यह दुखद घड़ी को सहने की शक्ति प्रदान करें।

पुलिस ने आईपीएल के सटोरियों को पकड़ा

बैतूल। आईपीएल क्रिकेट मैच में मुखबिर मोबाईल के माध्यम से थाना बोरदेही में सट्टा खिलाने की सूचना ग्राम खेड़लीबाजार के पास प्राप्त होने पर थाना बोरदेही के स्टाफ द्वारा तरोड़ा कला जोड़ के पास बड़गाँव में 02 व्यक्ति को रंगो हाथो पकड़ा 1) चेतन सोनी पिता योगेन्द्र सोनी निवासी ग्राम हथनोरा 2) रोहित उर्फ लालू पिता अमीर सिंह रघुवंशी निवासी ग्राम बम्हनी का रहना बताया जिनसे पूछताछ करने पर क्रिकेट मैच सनराईज हैदराबाद कोलकाता नाईटराईटर पर क्रिकेट लाईन गुरू एप्प पर सट्टा लगाना बताया आरोपीगणो के पास कंपनी का फोन, नगदी 630 रूपये, लीड़ पेन एवं सट्टा अंक लिखी डायरी मिली एवं आनलाईन फोन पे के माध्यम से रूपये पैसो का ट्रांसजेक्शन होना पाया गया। दोनो से पूछताछ करने पर उक्त सट्टे के राशि राकेश पिता फूलसिंह रघुवंशी निवासी पाथाखेड़ा थाना सारणी को देता था एवं अन्य लोगो भी इस सट्टे के कारोबार में शामिल है। उक्त आरोपीगणो के विरूध्द अपराध धारा 4 (क) मध्यप्रदेश पब्लिंक गेम्बलिंग एक्ट, 109 भादवि एवं 66 का अपराध पंजीबध्द कर अनुसंधान मे लिया गया एवं राकेश रघुवंशी एवं अन्य लोगो जो उक्त सट्टा के कारोबार में मुलताई क्षेत्र एवं खेड़लीबाजार क्षेत्र के शामिल है उनकी तलाश की जा रही है। दोनो आरोपीगणो के विरूद्ध भी प्रतिबंधात्मक कार्यवाही की गई। उक्त कार्यवाही में प्र. आर. 338 सुनील पन्द्राम, प्र.आर. 13 अनंतराम यादव एवं आर. 727 रोहित भारती की विशेष भूमिका रही।

बलात्कार के आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्त

बैतूल। थाना कोतवाली बैतूल के अपराध क्रं. 524-2024 धारा 376 (2)एन ,450, 506 भादवि में घटना दिनांक से फरार चल रहे आरोपी नितेश यादव पिता बाबूलाल यादव 20 साल को चौकी पाढर थाना कोतवाली की पुलिस टीम द्वारा दिनांक 26.05.2024 को कडी मेहनत व हिकमत अमली से गिरफ्तार किया गया है । आरोपी को आज दिनांक 27.05.24 को माननीय न्यायालय पेश किया जा रहा है। उक्त संपूर्ण कार्यवाही में उनि दिनेश कुमरे, सउनि जगदीश रैकवार, आर. 102 दिनेश धुर्वे की विशेष भूमिका रही है।

कर्बला घाट पुलिया का मामला पहुंचा अदालत, चार दिन पहले नीचे गिर गई थी जीप

बैतूल। बैतूल के इंदौर परतवाड़ा हाईवे पर मौजूद कर्बला घाट पुलिया का मामला अदालत पहुंच गया है। यहां रेलिंग न होने से चार दिन पहले एक जीप नीचे जा गिरी थी। इसके बाद बैतूल के एक समाजसेवी ने पुलिया को चौड़ी करने यहां रेलिंग और लाइट की व्यवस्था करने स्थाई लोक अदालत का दरवाजा खटखटाया है। इस मामले में कलेक्टर और ईई चूक को पार्टी बनाया गया है। बैतूल के पाथाखेड़ा निवासी अधिवक्ता और समाजसेवी धीरज गव्हाड़े ने धारा 22 सी विधिक सहायता अधिनियम के तहत कोर्ट में आवेदन प्रस्तुत कर इस पुलिया की दुरुस्ती के लिए आदेश जारी करने की गुहार लगाई है। बता दे की चार दिन पहले एक बुलेरो जीप यहां नीचे गिर गई थी। जिसमे तीन लोग घायल हो गए थे। अधिवक्ता गिरीश गर्ग ने बताया की कर्बला पुलिया का यह मामला स्थाई लोक अदालत के पीठासीन अधिकारी के सामने पेश किया है। जिसमे पुलिया से जुड़े तथ्यों को रखकर इसमें सुधार की मांग की गई है।

यह है पूरा मामला

यह पुल बैतूल को अमरावती परतवाडा भैसदेही चिचोली भीमपुर हरदा, इन्दौर एवं अनेक ग्रामो को जोडने वाला पुल माचना नदी पर सदर एवं दनोरा के रास्ते पर स्थित है । इस पुल के नीचे से माचना नदी बहती है जिसमे लगभग साल भर पानी रहता है। यह पुल लगभग 70-80 वर्षो से अधिक पूर्व निर्मित पुल है जिसकी स्ट्रेन्थ वर्तमान भारी आवगमन को सहन किये जाने योग्य भी नहीं है। इस पुल पर से प्रतिदिन 100 से 150 यात्री बसे एवं अनेक भारी वाहनों तथा दो पहियों एवं चार पहियों वाहनों का भी लगातार आवागमन होता है। इस पुल पर वाहनों एवं राहगीरों के आवागमन तथा सुरक्षा हेतू सड़क के दोनो किनारों पर अर्थात नदी की ओर किसी भी तरह की कोई रेलिंग निर्मित नही की गई है। साथ ही पुल की चौडाई वाहनों एवं राहगीरों के आवागमन हेतू पूर्णतः अपर्याप्त भी है । पुल लगभग 12 फुट चौड़ा और 40 फुट लम्बाई का है। इस पुल से गिरकर कई लोगों की मौत तक हो चुकी है।

तितली चौराहे पर चाकू की नोक पर ग्रामीण से लूटे रुपये, एक युवक की बाइक लेकर गए अज्ञात चोर

बैतूल। दो दिन पहले सदर में महिला के गले से चेन छिनकर भागने का मामला अभी सुर्खियों में ही था कि कोतवाली क्षेत्र के तितली चौक पर लूट और चोरी की घटना सामने आई है। जानकारी के मुताबिक रविवार- शनिवार की दरम्यानी रात अज्ञात लुटेरों ने जहां एक व्यक्ति से लूट की घटना को अंजाम दे डाला तो वहीं आज सुबह फूल तोड़ रहे एक व्यक्ति की बाइक उसकी आंखों के सामने दो अज्ञात युवक ले उड़े। शिकायत के बाद दोनों ही घटनाओं में गंज पुलिस ने संज्ञान लेकर पतासाजी शुरू कर दी है।

पहली घटना में पीड़ित अनिल चन्देलकर निवासी दनोरा ने अपनी शिकायत में बताया कि रात्रि करीब 1.45 बजे वह अस्पताल से अपने घर दनोरा जा रहा था। तभी कर्बला घाट के ऊपर दो युवकों ने उसे रोका और चाकू की नोंक पर उसके

पास रखे हुए पैसे लेकर फरार हो गए। अनिल ने अपने आवेदन में यह तो नहीं बताया कि लुटेरे कितनी रकम लेकर भागे, लेकिन कोतवाली टीआई देवकरण डेहरिया ने बताया कि अनिल ने 150 रुपए की लूट होना बताया है।

आंखों के सामने बाइक लेकर फरार हुए युवक- दूसरी घटना भी तितली चौराहे पर आज सुबह घटित हुई यहां कलेक्ट्रेट में पदस्थ एक कर्मचारी सड़क किनारे अपनी बाइक खड़ी कर फूल तोड़ने में मशगूल था। चाबी बाइक में ही लगी हुई थी। इसी बीच उसे बाइक स्टार्ट करने की आवाज सुनाई दी जैसे ही उसका ध्यान बाइक की तरफ गया तब तक दो युवक उसकी आंखों के सामने ही बाइक लेकर फरार हो चुके थे। दोनों ही घटनाओं की शिकायत गंज थाने में दर्ज होने के बाद पुलिस भी सक्रिय हो गयी है। कोतवाली के टीआई देवकरण डेहरिया ने बताया कि तितली चौराहे पर पूछताछ की जा रही है। जल्द ही दोनों घटनाओं का पर्दाफाश किया जाएगा।

बैतूल में राज्य स्तरीय सॉफ्ट बेसबॉल प्रतियोगिता की जाएगी: योगी खंडेलवाल

बैतूल। विगत दिनों नेपाल में एशिया कप सॉफ्टबेसबॉल प्रतियोगिता संपन्न हुई। जिसमें नेपाल में नेपाल, भूटान, बांग्लादेश व भारत के खिलाडियों ने हिस्सा लिया। इस संबंध में बैतूल जिला सॉफ्ट बेसबॉल फेडरेशन के संरक्षक योगी खंडेलवाल व अध्यक्ष राहुल गोरिया ने भारतीय टीम में मप्र के खिलाडी- अभिषेक रीवा, हिरदेश यादव सीहोर, कुमारी प्राची भोपाल, हीना भोपाल को शुभकामनाएं दी। संरक्षक योगी खंडेलवाल ने बताया कि बहुत जल्द बैतूल जिले में सॉफ्टबेसबॉल की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। जिससे स्थानीय खिलाडियों को भी अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा। बैतूल डिस्ट्रिक्ट सॉफ्टबेसबॉल फेडरेशन ने सॉफ्टबेसबॉल खेल की ट्रेनिंग प्रारंभ कर दी है। जिससे इस खेल को और अधिक बढ़ावा मिल सके। बैतूल जिला सॉफ्टवेसबाल एसोसिएशन के सेक्रेटरी श्रीमती नीता वराठे, उपाध्यक्ष जगदीश वागद्रे, सह सचिव शलभ खंडेलवाल, कोषाध्यक्ष धीरज साहू, कार्यसमिति सदस्य पवन पवार, पियूष भावसार, सुजय पवनिकार, प्रणव वराठे व संजू कोरोसने भी इन सभी खिलाड़ियों को उनकी सफलता बधाई और उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

76 साल के बूढ़े ने किया था मासूम से रेप, आरोपी को 20 वर्ष का कठोर करावास

बैतूल। महज 11 साल की नाबालिग बालिका के साथ एक 76 साल के बूढ़े ने रेप किया था। इस मामले में न्यायालय ने आरोपी को 20 वर्ष के कठोर कारावास और कुल 6,000 रुपये के जुर्माने से दंडित किया है। अनन्य विशेष न्यायालय (पॉक्सो एक्ट) बैतूल ने यह सजा सुनाई।

अभियोजन मीडिया सेल प्रभारी अमित राय (एडीपीओ) ने बताया कि आरोपी रामदास पिता पिरमू उपराले, उम्र-76 वर्ष, निवासी-थाना कोतवाली, जिला-बैतूल (मप्र) को यह सजा सुनाई गई है। आरोपी को धारा 376(एबी) भादंवि समाहित धारा 5(एम)6 पॉक्सो एक्ट में 20 वर्ष के कठोर कारावास एवं 6000 रुपये के जुर्माने से दण्डित किया गया।

यह है पूरा मामला- पीड़िता की मां ने थाना कोतवाली बैतूल में आकर रिपोर्ट कराई कि 16 जून 2021 को वह दोपहर करीब 01 बजे कॉम्प्लेक्स में शौच करने गई थी। वहां लेडिज कॉम्प्लेक्स तरफ का मेन गेट बंद था। उसने दरवाजा ठोका तो अंदर आरोपी रामदास ने दरवाजा खोला। उसने देखा कि उसकी लड़की पीड़िता अंदर थी। पीड़िता सलवार नहीं पहने हुई थी।

मां को देखते ही रो पड़ी- पीड़िता ने जैसे ही अपनी मां को देखा तो वह रोने लगी। पीड़िता ने अपनी मां को बताया कि आरोपी ने उसके साथ बुरा काम किया। पीड़िता की मां की शिकायत के आधार पर अभियुक्त रामदास के विरूद्ध एफआईआर दर्ज की गई। आरोपी को गिरफ्तार किया गया।

दोषी सिद्ध होने पर सजा- पुलिस ने विवेचना उपरांत अभियोग पत्र न्यायालय के समक्ष विचारण हेतु प्रस्तुत किया। प्रकरण की विवेचना पुलिस थाना कोतवाली में पदस्थ उपनिरीक्षक प्रीति पाटिल के द्वारा की गई। विचारण में अभियोजन ने अपना मामला युक्तियुक्त संदेह से परे प्रमाणित किया। जिसके आधार पर न्यायालय द्वारा आरोपी को दंडित किया गया।

अवैध शराब परिवहन करते ट्रक को पकड़ा, 5 लाख की 107 पेटी अवैध देशी-विदेशी शराब पकड़ी

बैतूल। आईसर ट्रक अवैध शराब से भरा हुआ सोमवार को बैतूल तरफ से भैसदेही आ रहा है जिसकी सूचना से थाना प्रभारी सुश्री अंजना धुर्वे व्दारा उनि. प्रीति पाटिल के हमराह स्टाफ मुखबिर की सूचना तस्दीक हेतु बरहापुर रोड शिव मंदिर के पास तत्काल रवाना किया। जहा एक आईसर ट्रक क्र. एमपी 04 जीबी 3283 बैतूल तरफ से आता देख रोका ट्रक चालक द्वारा आईसर ट्रक को रिवर्स कर पलटाने का प्रयास करने लगा जो पुलिस को देख कर, आईसर ट्रक चालक ट्रक को छोड कर अंधेरे का फायदा उठा कर भाग गया। आईसर ट्रक को चेक करने

पर खाकी रंग के खोके में अवैध देशी एवं अग्रेजी शराब कुल 107 पैटी जिसकी कीमत करीबन 5 लाख रूपये एवं घटना में प्रयुक्त आईसर ट्रक कीमत 15 लाख रु कुल कीमत 20 लाख रूपये को समक्ष गवाहन जप्त किया, थाना पर अपराध पजीवध्द कर विवेचना में लिया गया। उक्त प्रकरण में तत्कालीन थाना इंचार्ज उनि. प्रीति पाटिल, सउनि. अजय भाट, सउनि. अवधेश वर्मा, प्रआर. 22 छोटेलाल, आर.490 नारायण जाट, आर.494 सुनील उड़के, आर. 426 मनोज इवने की महत्वपूर्ण विशेष भूमिका रही।

मंदिरों में चोरी रोकने पुलिस का कदम, एक दर्जन मंदिरों में सुरक्षा व्यवस्था का लिया जायजा

सीसीटीवी कैमरे लगाने दी समितियों को समझाइश

बैतूल। सारणी क्षेत्र के मंदिरों में कीमती वस्तुओं एवं प्रतिमाओं की सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए अनुविभागीय अधिकारी सारणी रोशन जैन द्वारा पुलिस के साथ करीब एक दर्जन मंदिरों का निरीक्षण किया। एसडीओपी ने थाना सारणी व चौकी पाथाखेडा के पुलिस स्टाफ के साथ सारणी क्षेत्र के मठारदेव मंदिर, सांई मंदिर, शंकर मंदिर, राम मंदिर, शीतला माता मंदिर, गायत्री मंदिर, शनि मंदिर, जैन मंदिर, गुणवंत बाबा मंदिर , काली माई मंदिर व हनुमान मंदिर का भ्रमण कर मंदिरो के दान पेटी, कैमरा, माईक, सुरक्षा व्यवस्था को चौक किया। मंदिरो के पुजारियो के सुरक्षा दृष्टि संबंधि सुझाव दिये एवं ऐसे मंदिर जहाँ सीसीटीव्ही कैमरे नही है उन मंदिरो के पुजारी व समिति के प्रभारियो को कैमरे लगवाने हेतु सुझाव दिये गये। पुजारियो

एवं समिति के प्रभारियो द्वारा कैमरा लगाने के लिये तैयार होकर आश्वाशन दिया। इस दौरान मोबाइल नम्बर का आदन प्रदान किया गया एवं रात्रि गस्त कर्मचारी/अधिकारियो के धार्मिक स्थान, बैंक एटीएम, को चौक करने के निर्देश दिये गये।

मंदिर के शिखर और मस्जिद की मीनारों से सांप्रदायिक सौहार्द्र के साथ उतारे गए स्पीकर्स

ध्वनि प्रदूषण रोकने के लिए प्रशासन की देखरेख में उतारे गए स्पीकर

बैतूल। ध्वनि प्रदूषण के नियंत्रण के संबंध में राज्य शासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का कड़ाई से पालन कराने तथा ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित किए जाने के संबंध में दिए गए निर्देशों के अनुपालन में कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी द्वारा जिले के बैतूल, मुलताई, घोड़ाडोंगरी, आमला एवं भैंसदेही क्षेत्रों में एक साथ कार्रवाई के लिए दल गठित कर कार्रवाई के निर्देश दिए गए। बैतूल जिले में धार्मिक स्थलों पर लगाए गए निर्धारित डेसिबल से अधिक क्षमता वाले लाउडस्पीकर को उतारने की कार्रवाई की गई। एडीएम राजीव नंदन श्रीवास्तव के अधीन तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार सहित संबंधित थाना प्रभारी अथवा उनके प्रतिनिधि एवं क्षेत्रीय अधिकारी मध्य प्रदेश ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा नामित अधिकारी उडनदस्ते दल में शामिल किए गए है जो एडीएम को रिपोर्ट करेंगे।

मुलताई में एक मंदिर और दो मस्जिदों से हटाए लाउड स्पीकर

तहसीलदार बी.डी. कुमरे, सीएमओ आर.के. इनवाती, थाना प्रभारी राजेश सातनकर एवं जी.आर. देशमुख की संयुक्त टीम द्वारा मुलताई में स्थित मंदिर, मस्जिद एवं गुरुद्वारे में लगे ध्वनि प्रसारण यंत्र (माइक एवं लाउडस्पीकर) का निरीक्षण किया गया। टीम ने पांच मंदिरों एवं पांच मस्जिदों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान नियमों का उल्लंघन होने पर एक मंदिर एवं दो मस्जिदों में से लाउड स्पीकर हटवाए गए।

घोड़ाडोंगरी में हटाए 6 स्पीकर

घोड़ाडोंगरी एसडीएम अभिजित सिंह ने बताया कि क्षेत्र में सौहार्दपूर्ण ढंग से लोगों के द्वारा स्वेच्छा से आगे बढकर मंदिर और मस्जिद से स्पीकर उतारे गए। यहां

घोड़ाडोंगरी एवं शाहपुर में 4 मंदिरों से 6 लाउड स्पीकर और 4 मस्जिदों से 4 लाउडस्पीकर हटाए गए। चिचोली तहसीलदार अतुल श्रीवास्तव ने बताया कि चिचोली में लाउड स्पीकर हटाए गए। इनमें 2 स्पीकर मंदिरों के और दो स्पीकर मस्जिद से हटाए गए। मा.उच्च न्यायालय के आदेश का सभी ने सम्मान किया।

नामित उड़न दस्ते द्वारा नियमित एवं आकस्मिक रूप से निर्धारित उपकरणों के साथ ऐसे धार्मिक एवं सार्वजनिक स्थानों का अचानक निरीक्षण किया जाएगा, जहां ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग होता हो तथा इसके संबंध में प्राप्त शिकायत की आकस्मिक जांच की जाएगी तथा नियमों का पालन सुनिश्चित कराया जाएगा। ध्वनि प्रदूषण के लिए इंडस्ट्रियल एरिया में ध्वनि डेसिबल दिन के समय 75 और रात के समय 70 डेसिबल से अधिक नहीं होना चाहिए। इसी प्रकार कमर्शियल क्षेत्र में दिन में 65 रात में 55 और रहवासी क्षेत्र में दिन में 55 डेसिबल और रात में 45 डेसिबल तथा शांत क्षेत्र में दिन में 50 डेसिबल और रात्रि में 40 डेसिबल से अधिक न हो।

गृह विभाग द्वारा जारी आदेश में ध्वनि प्रदूषण से मानव जीवन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का उल्लेख करते हुए कहा गया कि ध्वनि प्रदूषण से मनुष्य के काम करने की क्षमता, आराम, नींद और संवाद में व्यवधान उत्पन्न होता है। कोलाहल पूर्ण वातावरण के कारण उच्च रक्तचाप, बेचैनी, मानसिक तनाव तथा अनिद्रा जैसे प्रभाव शरीर पर देखने को मिलते है। अधिक शोर होने से कान के आंतरिक भाग के क्षति होने के प्रमाण भी पाए गए है। लाऊड स्पीकरों, तेज हॉर्न के साथ निजी आवासों में भी ध्वनि प्रदूषण के इस्तेमाल पर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिशा-निर्देश जारी किए गए है। समाचार लिखे जाने तक अन्य विधानसभा क्षेत्रों में कार्रवाई जारी रही।

मुख्य चुनाव आयुक्त मतगणना की तैयारियों पर जिला निर्वाचन अधिकारियों से हुए ऑनलाईन रूबरू

बैतूल। मुख्य चुनाव आयुक्त भारत सरकार राजीव कुमार ने प्रदेशों के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारियों, जिला निर्वाचन अधिकारियों को सफलतापूर्वक मतदान प्रक्रिया पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि मतदान प्रक्रिया जितनी महत्वपूर्ण थी मतगणना प्रक्रिया भी उतनी ही संवेदनशील और महत्वपूर्ण है। आप सभी ने जितना निर्वाचन के प्रथम चरण मतदान का

पारदर्शिता, ईमानदारी और आचार संहिता के निर्दिष्ट मापदण्डो के अनुरूप निष्पादन किया है। निर्वाचन के प्रति उसी प्रतिबद्धता और कर्मठता को बनाए रखते हुए मतगणना के महती कार्यक्रम को पूरा करना है। इस अवसर पर कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन, उप जिला निर्वाचन अधिकारी मकसूद अहमद, एडीएम राजीव नंदन श्रीवास्तव, एवं अन्य अधिकारी ऑनलाईन इस बैठक में कलेक्ट्रेट भवन के एनआईसी सभागृह में उपस्थित थे।

गीतों की महफिल

मनोरंजन

रमेश रंजन त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

संगीत' हॉल में श्रोताओं द्वारा आयोजित फिल्मी गीतों के अनोखे सम्मेलन में सभी सीटें भर चुकी थीं और लोगों के आने का सिलसिला थम नहीं रहा था। उसे लगा इतने लोग हॉल में कहां समाएंगे? जवाब मिला आयोजकों से कि संगीत के विलक्षण हॉल की यही विशेषता है कि जितने लोग आते जाएंगे, हॉल का आकार उतना बड़ा होता जाएगा। वाद्य यंत्र, राग-रागिनियां, ठुमरी, दादरा, टोड़ी, टप्पा, गजल, गीत, कव्वालियां, लोकगीत, अलाप, बंदिश, तान, सुर, ताल, डुएट, कोरस, नौ रस, छंद, कविता और अनेक संगीत विधाएं पूरा इंतजाम संभाले थीं। क्यों न हो, फिल्मी गीतों का सम्मान समारोह जो था। सालों-साल मंत्रमुग्ध कर देनेवाले फिल्मी गानों से रूबरू होने और उन्हें सम्मानित करने की खातिर यह महत्वाकांक्षी सम्मेलन बुलाया गया था। लोग उनपर उम्र का असर न होने का राज भी जानना चाहते थे। मंच के सामने अति विशिष्ट लॉबी थी जिसमें 'इक बंगला बने न्यारा', 'गम दिए मुस्तकिल कितना नाजुक है दिल', 'सो जा राजकुमारी', 'जब दिल ही टूट गया' विराजमान थे। उनके पीछे 'पिया मिलन को जाना', 'मैं बन की चिड़िया बन के बन बन बोलूं रे', 'अफसाना लिख रही हूं दिले बेकरार का', 'दूर हटो ऐ दुनिया वालो हिंदुस्तान हमारा है', 'मिल के बिछड़ गई अंखियां', 'अंखियां मिला के जिया भरमा के चले नहीं जाना' बैठे हुए थे। 'जवां है मोहब्बत हसीं है ज़माना', 'आ जा मेरी बर्बाद मोहब्बत के सहारे', 'तू मेरा चांद मैं तेरी चाँदनी', 'आवाज दे कहां है दुनिया मेरी जवां है', 'धड़कते दिल की तमन्ना हो मेरा प्यार हो तुम' जैसे अनेक हर दिल अजीज गीत भी वहां मौजूद थे। ये सब उम्रदराज होने के बावजूद अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में सफल थे।

उसने देखा युवा गीतों के साथ पांच-छह दशक पुराने गाने भी चुस्त दुरुस्त अवस्था में अपनी जगह बनाए हुए प्रशंसकों से घिरे थे। उसे सम्मानित होने वाले गानों का इंटरव्यू लेना था। अति विशिष्ट श्रेणी इन औपचारिकताओं से परे थी। निर्णायक मंडल के लिए हजारों में से कुछ गानों का चुनाव करना बड़ी चुनौती थी। उन्हें बहुत मशक्कत करनी पड़ी। कोई गीत किसी से कम नहीं था।

समारोह की औपचारिक शुरुआत हुई। प्रारंभिक उद्बोधन के पश्चात माइक उसके हाथ में था। उसने सबसे पहले 'सर्वश्रेष्ठ सदाबहार गीत' के रूप में 'आएगा आनेवाला' से मंच पर आने का अनुरोध किया। पचहत्तर साल की उम्र होते हुए भी वे सामान्य चाल से चलकर आए। उनका जोरदार तालियों से स्वागत और शॉल, श्रीफल से सम्मान किया गया। उसने उनसे पूछा कि प्लैटिनम जुबली मनाते हुए भी वे इतने फिट कैसे हैं कि जब भी गानों की बात चलती है उनका उदाहरण दिया जाता है? वे मुस्कुराए, 'मैं आशावादी हूं। ठहराव में नहीं, निरंतरता में यकीन करता हूं। मैं सभी को यही सिखाता हूं कि अच्छा समय अवश्य आएगा। केवल धैर्य रखने की आवश्यकता है। मेरे प्राण लता जी का दिव्य स्वर है। मुझे खेमचंद प्रकाश ने संगीत से सजाया है। मेरा शरीर नक्शब के शब्द हैं। मैं रहस्यमय हूं इसीलिए मेरी चुस्ती-फुर्ती भी रहस्यमयी है।'

उसने उन्हें धन्यवाद दिया और 'सर्वश्रेष्ठ ऑइकॉनिक गीत' 'गोविंदा आला रे' को आवाज दी। वे मस्ती में थिरकते हुए आए। स्टेज की सीढ़ियां ऐसे चढ़े जैसे जन्माष्टमी के दिन लोग मटकी फोड़ने के लिए ऊपर जाते हैं। सीटियों और तालियों के बीच सम्मानित होने के बाद उसने 'गोविन्दा आला रे' से साठ साल की उम्र में भी किसी को अपने से आगे न निकलने देने और ऑइकॉनिक बने रहने का कारण जानना चाहा। वे बोले, 'मैं उमंग, उत्साह और समर्पण हूं। मुझे फिल्माते समय मनमोहन देसाई ने आम लोगों की भीड़ इकट्ठा की थी। मैं जनता का गाना हूं, उनके दिल के नजदीक हूं, इसलिए लोगों के दिलोदिमाग से कभी उतर नहीं सकता।' बात में दम था। सबने खूब सराहा।

अब उसके सामने थे 'बेस्ट लव सॉन्ग' चुने गए चौंसठ वर्षीय 'प्यार किया तो डरना क्या'। उसे कोई भूमिका नहीं बनानी पड़ी। सम्मान पाकर भाव विभोर हुए वे बताने लगे, 'ईश्वर प्रेम का दूसरा नाम है। भगवान की बनाई दुनिया में प्यार ही सारतत्व है। प्रेम की भावना पवित्र और शाश्वत है। मैं उसी मोहब्बत की श्रेष्ठता का उद्घोष करता हूं। प्रेम कभी आउट ऑफ डेट नहीं होता इसीलिए मैं कभी नंबर दो पर नहीं आ सकता। कौन है जिसके मन में प्यार नहीं? कौन प्रेमी है जो निडर नहीं बनना चाहता? कौन है जिसे मेरा संदेश पसंद नहीं?' सिर्फ वह नहीं सभी इस बात से सहमत थे। बहुत देर तक तालियां गूंजती रहीं।

उसकी सूची में अगला नाम था 'लाइफ टाईम एचीवमेंट अवार्ड' पानेवाले 'आवारा हूँ' का। वे अपनी यायावरी मस्ती के साथ मंच पर आए, सम्मानित हुए और सबके मन की बात समझ गए। वे गीतों की महफिल में सात से भी अधिक दशकों से अपनी गरिमामयी उपस्थिति बनाए रखने की जिज्ञासा का समाधान करने लगे, 'सभी आवारा हैं, कम से कम मन से तो होते ही हैं। क्या देश और क्या विदेश, मन तो लगातार यहां से वहां भटकता रहता है। इसीलिए मुझे अपने वतन के साथ दूसरे देशों में भी पसंद किया गया। आवारा होने का अर्थ है बंधनमुक्त होना। यह उन्मुक्तता किसे नहीं चाहिए? मानवमात्र पैदाइशी स्वतंत्र है। मैंने उनके मन की बात का प्रतिनिधित्व किया और सबका चहेता बन गया।' दर्शक दीर्घा से तालियों के साथ सीटियां बजने की आवाज भी आ रही थी।

अंत में उसने आमंत्रित किया उनको जिन्हें 'अडिग गीत' के खिताब से नवाजा गया था क्योंकि उनके आने के बाद लोकप्रियता की नई इबारत लिखी गई। बहुत से गीत आए और गए लेकिन इन्हें अपने स्थान से कोई नहीं डिगा सका। ये थे 'बहारो फूल बरसाओ'। जब वे मंच की तरफ बढ़े तो सचमुच फूलों की बारिश की गई। अट्ठावन साल का होने के बावजूद वे युवा नजर आ रहे थे। उसने आदर के साथ उनसे अंगद के पांव की तरह चोटी पर डटे रहने का राज जानना चाहा। वे थोड़ा भावुक हो गए, बोले- 'मैं अपने महबूब से मिलन की मधुर स्मृतियों का गीत हूं। किसी के लिए महबूब ऊपरवाला हो सकता है तो किसी के लिए धरती पर रहनेवाला इंसान। मनुष्य के भीतर का अधूरापन उसे प्रेमी से मिलने के लिए व्याकुल करता है। मैं इसी बेचैनी से निजात दिलाता हूं। इसीलिए मिलन के पवित्र बंधन विवाह के समय आप लोग मुझे अवश्य याद करते हैं। इसका श्रेय केवल मुझे नहीं जाता। शिवरंजनी राग ने शंकर जयकिशन को प्रेरित किया, हसरत जयपुरी ने शब्दों में उकेरा और मोहम्मद रफी ने अपने निर्दोष स्वर में ढालकर मुझे आपके समक्ष प्रस्तुत कर दिया। ये लोग अब हमारे बीच नहीं हैं किंतु उनकी अमर रचना के रूप में मैं सदैव आपके साथ रहूंगा। आपके प्यार ने मुझे उम्र का अहसास ही नहीं होने दिया।' वह 'बहारो फूल बरसाओ' को जनता का स्टैंडिंग ओवेशन मिलते देख रहा था। तभी तालियों की गड़गड़ाहट से उसकी नींद खुल गई।

नर्मदापुरम- की डायरी

संजीव डे राय

अतिक्रमणकारियों से बेपरवाह क्यों है शासन-प्रशासन

फिर से नगर में अतिक्रमण कारियो ने अपने पैर पसारने शुरू कर दिए है ।आखिर क्या कारण है कि कोई शासन के नियमो को गंभीरता से नहीं लेता? क्या राजनीतिकं हस्तक्षेप के चलते शासन डरता है। चारो तरफ फिर से अतिक्रमण शुरू हो गया है ।ऐसा नेता भी क्या जो शासन के नियमों को नही मानता ? प्रतिवर्ष शासन भी अपना टाइम ओर पैसा क्यो बर्बाद करता है ? कुछ बाते समझ से परे है हम तो देखेंगे तो बोलेंगे जरूर!

रेत बिक्री के दलाल और शासन के कर्मचारी

कहने को तो रेत माफिया पर नकेल कसती जा रही है पर कसा किधर रही..? यह जमीनी स्तर पर तो दिखाई नही पड़ती बस तरीका बदला है मुख्यालय पर अब ट्रेक्टर ट्रॉली कृषि के बदले इसी काम में उपयोग की जा रही है बारिश में रेत पर रोक है तो रेत स्टॉक के नाम पर नया धंधा शुरू हो गया है। फिर रेत स्टॉक के मापदंड समझ से बाहर है ।

शराब की पाबंदी हटा ही देनी चाहिये..

नगर में कहने को तो शराब बंदी है पर शराब आसानी से उपलब्ध भी है यहां तक कि घर पहुंच सेवा भी आसानी की उपलब्ध है आस पास के ढाबे, होटल पर आसानी से शराब उपलब्ध है इतना ही नही नगर के आस पास के सड़को के किनारे, खाली प्लाटों पर देर रात तक पियक्कड़ देखे जा सकते है।

जानवरों का जमावड़ा...

पूरे नगर में आवारा मवेशी घूमते हुए दिख जाएंगे जिनके कारण कई दुर्घटनाएं भी हो चुकी है बावजूद इसके नगरीय प्रशासन ने कोई सख्त कदम नही उठाया है ,आखिर यह कैसा कानून है नियम है जो सही तरीके से कार्य कर रहा हो..?

शर्म सार है सबसे गंदे शहर के नगरवासी

राष्ट्रीय स्तर नर्मदापुरम को सबसे गंदे शहर का सम्मान पूर्व में मिल चुका है बावजूद इसके जवाबदार विभाग अपना कार्य ठीक से नही कर पा रहा है जिन जनप्रतिनिधियों को चुन कर नगरपालिका भेजा है वो अपने घर के आस पास सफाई कर्मचारियों से करवा कर सोच रहे है नगर साफ है। परिषद को बना कर शीर्ष नेता भी चुप बैठे है जनता को मूर्ख बना कर जो अपना उल्लू सीधा कर रहे है ।

मातृहस्त भोजन में परिवार से ही भोजन बनाकर लाये एवं सभी ने साथ में बैठकर भोजन किया

धामनोद में चल रहा है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मालवा प्रांत का 15 दिवसीय संघ शिक्षा वर्ग (विद्यार्थी)

धार। धामनोद में चल रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मालवा प्रान्त के 15 दिवसीय संघ शिक्षा वर्ग (विद्यार्थी) में मातृहस्त भोजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। भोजन के पूर्व धामनोद खण्ड से आये 265 परिवार व प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे शिक्षार्थियों के मध्य लोकमाता अहिल्याबाई के त्रिशताब्दी जन्मजयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में अहिल्याबाई के जीवन पर प्रकाश डालते हुए लोकमान्य तिलक विद्यालय उज्जैन के कार्यपालन अधिकारी श्री गिरीश भालेराव ने कहा कि अहिल्याबाई का जन्म महाराष्ट्र प्रांत के चौण्डी नामक ग्राम में हुआ था। अहिल्या बचपन से ही भगवान शिव की परम भक्त थी, अहिल्याबाई ने भारत भर में प्रसिद्ध मंदिरों का निर्माण व्यक्तिगत धन से करवाया। लोकमाता ने जगह-जगह अन्न क्षेत्र खोले, लोगों के लिए कुएँ-बावड़ी एवं तालाब बनवाए। अहिल्याबाई ने 28 वर्ष तक होल्कर राज्य को अनवरत उत्तम प्रशासन और यशस्वी न्याय प्रदान किया। उनका व्यवहार सबके साथ स्नेहयुक्त एवं आदरपूर्ण था। साथ ही भालेराव ने कहा कि अहिल्याबाई ने समाज के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। वह हमेशा अपनी प्रजा और गरीबों की भलाई के बारे में सोचती रहती थी, गरीबों की हर संभव सहायता के लिए तत्पर रहती थी।

अहिल्याबाई ने महिलाओं को शिक्षा का अधिकार दिया, विधवा महिलाओं का पुनर्विवाह भी शुरू कराया

अहिल्याबाई ने महिलाओं को शिक्षा का अधिकार दिया, विधवा महिलाओं का पुनर्विवाह भी शुरू कराया। सर्वप्रथम उन्होंने अपनी सहेली रेणु का दोबारा विवाह कराया। अहिल्याबाई ने औरंगजेब द्वारा तोड़े हुए मंदिरों का पुनर्निर्माण कराया, गरीबों में भोजन वितरण के लिए सदाव्रत आश्रम का निर्माण कराया। उन्होंने महेश्वर को अपनी राजधानी बनाया एवं वहाँ कई धार्मिक आयोजन और कथाएं करवाई।अहिल्याबाई का व्यवहार अपनी प्रजा के प्रति पुत्रवत था। काशी में मणिकर्णिका के अलावा एक नया घाट भी बनवाया। वाराणसी के तुलसी घाट के पास लोलार्क कुंड का निर्माण करवाया। कलकत्ता से काशी तक पक्की सड़क बनाने का सर्वप्रथम कार्य भी अहिल्याबाई ने किया था। उक्त कार्यक्रम में मंच पर वर्ग के सर्वाधिकारी श्री प्रकाश पाटीदार उपस्थित रहे। मातृहस्त भोजन में परिवार से ही भोजन बनाकर लाये एवं सभी ने साथ मे बैठकर भोजन किया। कार्यक्रम समाप्ति पर सहभागी परिवार को पौधों का वितरण भी किया। संघ शिक्षा वर्ग का प्रकट कार्यक्रम 2 जून को जनता जिनिंग धामनोद में होगा।

थेलेसिमिया पीड़ित मासूम वैष्णवी को ओ नेगेटिव रक्त देने ट्रेन से आई उड़ान ग्रुप की श्रीमती रीना जैसवाल

कहते है नारी शक्ति यदि ज़िद पर आ जाए तो यमराज से भी अपने पति के प्राण वापस ला सकती है ,तो वही ब्रम्हा, विष्णु, महेश त्रिलोक की शक्ति को अपने तपोबल से अबोध शिशु बना सकती है, नारी शक्ति का एक ऐसा ही उदाहरण सोमवार देखने को मिला जब थेलेसिमिया पीड़ित बच्ची वैष्णवी को ओ नेगेटिव रक्त की आवश्यकता थी, रक्त नही मिल पा रहा था क्योंकि यह रेयर ग्रुप है ऐसे में उड़ान ग्रुप के हेमन्त गुगनानी के संदेश पर उड़ान ग्रुप की सदस्य श्रीमती रीना शरद जायसवाल ग्रैंड ट्रंक एक्सप्रेस ट्रेन से बैतूल आई और अपना ओ नेगेटिव रक्त का दान मासूम बच्ची के लिए किया, इस अवसर पर मां शारदा साहयता समिति के अध्यक्ष पिंकी भाटिया संस्थापक शैलेंद्र बिहारिया ने उन्हें रक्त क्रांति सम्मान दिया और स्टेशन लेने व छोड़ने पहुंचे। उन्होंने कहा की एक मासूम बेटी की जान बचाने इतनी भीषण गर्मी में ऐसा नारी शक्ति ही कर सकती है। श्रीमती रीना जैसवाल ने बताया कि उन्होंने उनके पति श्री शरद जैसवाल की प्रेणना से प्रेरित होकर आज रक्त दान किया है । उन्होंने विश्वाश दिलाया कि आने वाले समय मे जब भी रक्त की आवश्यकता होगी वे जरूर पहुचेंगी।

गोविंदनगर में आरएसएस का प्रांतीय घोष वर्ग 2 जून को

सुबह सवेरे सोहागपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मध्यप्रान्त का प्रांतीय घोष वर्ग 2जून को सरस्वती ग्रामोदय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मछेरा रोड गोविंदनगर बनखेड़ी में आयोजित किया गया है। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता माननीय डॉ राजेश जी सेठी सुप्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ एवं प्रांत सह संघचालक रहेगें। कार्यक्रम की अध्यक्षता निरंजन जी वैष्णव, (पूर्व सैनिक व समाजसेवी करेंगे। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में संगठन, परस्पर आत्मीयता, समरसता, सेवा, अनुशासन व राष्ट्रभक्ति का भाव पोषित करता है। ज्ञातव्य है कि प्रत्येक वर्ष संघ के तत्वावधान में घोष प्रशिक्षण हेतु वर्ग आयोजित किए जाते हैं।

मारपीट करने वाले आरोपीगण को 1 वर्ष का सश्रम कारावास

नरसिंहपुर। न्यायालय न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी गोटेगाव जिला नरसिंहपुर के न्यायालय द्वारा मारपीट करने के प्रकरण में आरोपी वीरन उर्फ वीरेन्द्र कुंदौलियाए बन्धु उर्फ संजय कुमार कुंदौलिया दोनो आरोपी निवासी ग्राम.करेली कला थाना गोटेगांव जिला नरसिंहपुर को दोषसिध्द पाते हुए भा.द. वि. की धारा 325 में प्रत्येक आरोपी को 1 वर्ष का सश्रम कारावास एवं 500 रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया है। जिला मीडिया सेल प्रभारी द्वारा बताया गया कि दिनांक 07/06/2017 समय 07:00 बजे ग्राम करेली कला की है। फरियादी का खेत व वीरन चैधरी का खेत लगा हुआ है एवं खेतो के बीच में मेंड है। मेड पर बबूल का झाड था जिसे वीरन एवं बंदू उर्फ संजय ने काट लिया था जो फरियादी ने पेड़ काटने की बात पर आरोपी गण को बोला कि पेड क्यों काटे हो इसी बात को लेकर आरोपीगण ने फरियादी को गंदीगंदी गालिया देकर वीरन ने अपने हाथ में रखी लकड़ी से दाहिने पैर की पिंडली, जांघ में मारा एवं बंदू उर्फ संजय ने लकड़ी से दाहिने हाथ के कंधा में मारा जिससे चोट आकर फरियादी को दर्द हो रहा था।

एडवांस मेडिटेशन प्रोग्राम आयोजित

नरसिंहपुर। केन्द्रीय जेल नरसिंहपुर में जेल मुख्यालय के निर्देशानुसार एवं जेल अधीक्षक श्री अजमेर सिंह जी के मार्गदर्शन एवं जेल उप अधीक्षक श्री महेश टिकारिया तथा श्री एडवर्स स्वामी के पर्यवेक्षण में दिनांक 23.05.2024 से 26.05.2024 तक 04 दिवसीय आर्ट ऑफ लिविंग ''एडवांस मेडिटेशन प्रोग्राम '' (प्रिजन प्रोग्राम पार्ट - 2) का संचालन आर्ट ऑफ लिविंग संस्था द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बंदियों का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास कर उन्हें समाज की मुख्यधारा में जुड़ने योग्य बनाना है साथ ही जेल में परिरूद्ध रहने के दौरान बंदियों को तनाव मुक्त रहने की कला सिखाना भी है। इससे पहले इसी वर्ष माह अप्रैल में आर्ट ऑफ लिविंग ''प्रिजन प्रोग्राम'' के 08 दिवसीय कार्यक्रम के माध्यम से बंदियों को प्रशिक्षित किया गया था, उन्हीं बंदियों को इस एडवांस मेडिटेशन प्रोग्राम (प्रिजन प्रोग्राम पार्ट - 2) का प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए जेल मुख्यालय एवं मध्यप्रदेश शासन द्वारा वर्ष भर के लिए लक्ष्य निर्धारित किए हैं। बंदियों को तनावमुक्त करने एवं सकारात्मकता की ओर अग्रसर करने हेतु केंद्रीय जेल नरसिंहपुर में प्रशिक्षण कार्यक्रम

संचालित किया गया। जिसमे कुल 34 बंदियों द्वारा भाग लिया गया(इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में राजकोट गुजरात से आर्ट ऑफ लिविंग के प्रशिक्षक श्री राजेश मेहता जी द्वारा बंदियों को एडवांस मेडिटेशन कोर्स का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षक श्री अरविंद कुमार शर्मा (जिला जेल प्रोग्राम समन्वयक) भी सहप्रशिक्षक के रूप श्री राजेश मेहता जी के साथ प्रातः 6.30 बजे से संध्या 6.30 बजे उपस्थित रहे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जेल के सभी अधिकारियों द्वारा जेल अधीक्षक महोदय के मार्गदर्शन में बंदियों को प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए लगातार प्रेरित किया गया । कार्यक्रम के दौरान प्रमुख मुख्य प्रहरी श्री हीरा लाल मिश्रा का सुरक्षा अधिकारी के रूप में सराहनीय सहयोग रहा।

भाजपा जनों द्वारा मनाई गई स्वर्गीय सरताज सिंह की जन्म जयंती

नरसिंहपुर। भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय नरसिंहपुर में नर्मदापुरम लोकसभा के अजेय योद्धा पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय सरताज सिंह की जन्म जयंती मनाई गई कार्यकर्ताओं द्वारा उनके चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर लोकसभा क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए विकास कार्यों व उनके व्यक्तित्व व कृतित्व का स्मरण किया गया इस अवसर पर

पूर्व राज्य मंत्री जालम सिंह पटेल पूर्व जिला अध्यक्ष महंत प्रीतमपुरी गोस्वामी जिला उपाध्यक्ष विनीत नेमा पूर्व मंडल अध्यक्ष मनमोहन सलूजा राजीव ओसवाल नगर उपाध्यक्ष बृजेंद्र दुबे रोशन सिंह राजपूत पूर्व पार्षद समीर महाराज मूलचंद यादव सुनील प्रजापति शारदा साहू बबीता जाट सरवरी सिद्दीकी आदि कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

बागेश्वर धाम के भक्तों का उमड़ेगा जनसैलाब

6 से 10 जून तक पं. धीरेन्द्र शास्त्री करेंगे हनुमंत कथा

नरसिंहपुर। जिले में आयोजित होने जा रहे अब तक से सबसे बड़े धार्मिक आयोजन मे लाखों की संख्या मे भक्तों का पहुंचना तय है । उक्त संबंध मे आयोजन समिति द्वारा पत्रकारों से चर्चा करते हुये बताया कि 6 से 10 जून तक श्री हनुमंत कथा का आयोजन समीपी ग्राम नवलगांव मे किया जा रहा है, जिसमें कथा व्यास पंडित धीरेन्द्र शास्त्री जी महाराज बागेश्वर धाम द्वारा प्रतिदिन लाखों भक्तों को कथा

का रसपान कराया जावेगा। समिति द्वारा बताया गया कि 8 जून को दिव्य दरबार का आयोलन भी किया जावेगा तथा आने जाने की सुविधा के लिये पहुंच मार्ग चार दिशाओं से बना गया जिसमे तीन मार्ग सामान्य तथा एक वीआईपी तथा विकलांगों व प्रशासन के लिये आरक्षित रखा गया है। कलश यात्रा 6 जून को निकाली जावेगी जो प्रातः 8 बजे सदर मढिया से छिंदवाड़ा ओवर ब्रिज हनुमान मंदिर तक जायेगी तथा 11 हजार महिलायें कलश रखेंगी। कथा स्थल पर भक्तों के लिये सभी व्यवस्थाये उपलब्ध उसके साथ अति आवश्यक दवाईयां तथा भंडारा प्रसादी आदि की व्यवस्था रहेगी । उक्त मौके पर आयोजन समिति के सभी सदस्य मौजूद रहे।

टीआई की कार ने सफाईकर्मी को कुचला

हिट एंड रन कानून की ट्रेनिंग छोड़ रेस्टोरेंट पहुंचे, ढलान पर लुढ़की कार; दो थानेदार सस्पेंड

सागर (नप्र)। सागर में टीआई की स्कॉर्पियो कार बिना ड्राइवर ढलान पर आगे बढ़ी और एक सफाई कर्मचारी को कुचल दिया। कर्मचारी को हाथ - पैर और पेट में चोट आई है। वह अस्पताल में भर्ती है। बताया गया कि ड्राइवर हैंडब्रेक लगाना भूल गया था। घटना शनिवार शाम सिविल लाइन इलाके में राजघाट रोड की है। मामले में रविवार को एसपी ने देवरी और महिला थाने के प्रभारी को सस्पेंड कर दिया। स्कॉर्पियो देवरी थाना प्रभारी की बताई जा रही है। दोनों राजघाट रोड स्थित रेस्टोरेंट एंड बार में खाना खाने गए थे। हादसे के समय का होटल का सीसीटीवी फुटेज सामने आया है।थाना प्रभारियों के नशे में होने के सवाल पर एडिशनल एसपी लोकेश सिंहा ने कहा कि इसकी जांच की जा रही है।

ट्रेनिंग में न जाकर, होटल पहुंचे थानेदार

1 जुलाई से लागू होने जा रहे हिट एंड रन समेत नए कानून की जिला मुख्यालय में ट्रेनिंग चल रही है। 25 मई को देवरी थाना प्रभारी रोहित डोंगरे और महिला थाने के प्रभारी आनंद सिंह ट्रेनिंग में नहीं पहुंचे। शाम 6 बजे उनकी स्कॉर्पियो से एक्सीडेंट की जानकारी पुलिस को मिली। बताया जा रहा है कि दोनों राजघाट रोड पर स्थित रेस्टोरेंट एंड बार में पहुंचे। वहां से लौटते समय महिला थाना प्रभारी स्कॉर्पियो में आकर बैठ गए और ड्राइवर को देवरी थाना प्रभारी को बुलाने के लिए अंदर भेजा। ड्राइवर हैंडब्रेक लगाए बिना ही स्कॉर्पियो से उतर गया। ढलान पर खड़ी स्कॉर्पियो धीरे-धीरे आगे बढ़ गई। रोड किनारे सफाई कर रहे जैसीनगर के 25 वर्षीय प्रदीप वाल्मीकि को टक्कर मार दी। प्रदीप होटल का सफाई कर्मचारी है।

एसपी ने जारी किए निलंबन के आदेश

एसपी अभिषेक तिवारी ने निलंबन आदेश में कहा है कि सिविल लाइन थाना प्रभारी ने सूचना दी थी। इसमें बताया गया कि महिला थाने के प्रभारी आनंद सिंह आजाद और देवरी थाना प्रभारी रोहित डोंगरे 25 मई को जिला मुख्यालय में निर्धारित प्रशिक्षण कार्यक्रम से अनुपस्थित रहे। शाम को नशे की हालत में सिविल लाइन क्षेत्र में एक्सीडेंट किया।जिस समय कार ढलान से उतरी उसमें ड्राइवर के बाजू वाली सीट पर आनंद सिंह भी बैठे थे, लेकिन वे कार को संभालने की स्थिति में नहीं थे।

म.प्र.के सरकारी अस्पतालों में सोनोग्राफी का संकट

सीएम, स्वास्थ्य मंत्री के जिलों में जांच के लिए गर्भवतियां परेशान, एनएचएम की रिपोर्ट में खुलासा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर के मामले में देश के सबसे खराब स्थिति वाले राज्यों में शुमार है। नवजातों और प्रसूताओं की मौतों को रोकने के लिए सरकार गर्भावस्था के दौरान जांच, उपचार और देखभाल पर विशेष जोर देती है। गर्भावस्था में सोनोग्राफी की जांच सबसे अहम है। लेकिन, एमपी के सरकारी अस्पतालों में गर्भवती महिलाओं की सोनोग्राफी जांच ही नहीं हो रही है। कटनी के दो प्रमुख अस्पतालों जिला अस्पताल और विजय राघवगढ़ सिविल अस्पताल में सोनोग्राफी की सुविधा ही उपलब्ध नहीं है। अब कटनी के जिला अस्पताल में निजी डॉक्टरों की मदद से स्वास्थ्य विभाग सोनोग्राफी की सुविधा उपलब्ध कराने की तैयारी कर रहा है। यह चौंकाने वाली जानकारी एनएचएम के मेटरनल हेल्थ प्रोग्राम की समीक्षा में सामने आई है। एनएचएम की रिपोर्ट के मुताबिक कटनी के जिला अस्पताल और विजयराघवगढ़ सिविल हॉस्पिटल में स्त्र मशीनें हैं लेकिन डॉक्टर सोनोग्राफी जांच नहीं करतीं।

सीएम के गृह जिले में डॉक्टरों का संकट: उज्जैन जिला अस्पताल में तीन यूएसजी मशीनें है लेकिन सिर्फ एक डॉक्टर ही सोनोग्राफी कर रहे हैं। एक पीजीएमओ ट्रेंड होने के बावजूद सेवाएं नहीं दे रही हैं। उज्जैन जिले के बड़नगर, नागदा खाचरोद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में से सिर्फ खाचरोद में मशीन है। लेकिन ट्रेनिंग के लिए डॉक्टर नॉमिनेटेड नहीं हैं। एक मशीन सीएमएचओ के स्टोर में है। देवास जिले की सोनकच्छ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में एसजी मशीन है लेकिन डॉक्टर सोनोग्राफी नहीं कर रहीं। शाजापुर जिले के सुजालपुर सिविल अस्पताल में मशीन और डॉक्टर उपलब्ध होने के बावजूद सोनोग्राफी नहीं हो रही है।नीमच जिले की सिंगोली सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में सोनोग्राफी मशीन ही नहीं है।

भोपाल में मशीनें उपलब्ध लेकिन, डॉक्टर नहीं

भोपाल के जिला अस्पताल में तीन यूएसजी मशीनें होने के बावजूद सिर्फ एक रेडियोलॉजिस्ट है। बैरागढ़ सिविल अस्पताल में दो यूएसजी मशीनें है लेकिन प्राइवेट डॉक्टर से चार दिन सेवाएं लेनी पड़ रहीं हैं। कैलाश नाथ काटजू अस्पताल में तीन स्त्र मशीनें हैं लेकिन डॉक्टर एक ही ट्रेंड हैं। काटजू अस्पताल रोजाना करीब 150 से 180 महिलाएं आतीं हैं। लेकिन, यहां सोनोग्राफी की सुविधा ही नहीं मिल पा रही है। सीहोर जिले की आस्था में सिर्फ एक प्राइवेट डॉक्टर से सोनोग्राफी करनी पड़ रही है।

राजगढ़ में एक मशीन, डॉक्टर नहीं: राजगढ़ जिला अस्पताल में एक मशीन है लेकिन डॉक्टर ना होने के चलते कलेक्टर ने प्राइवेट डॉक्टर से सोनोग्राफी की व्यवस्था की है। नरसिंहगढ़ और सारंगपुर के अस्पतालों में स्त्र मशीन उपलब्ध है लेकिन डॉक्टर सोनोग्राफी करने के लिए नॉमिनेटेड नहीं है। ऐसे में जांच नहीं हो पा रही है।

इंदौर में प्राइवेट डॉक्टर बुलाकर करानी पड़ रही जांच

इंदौर के महू सिविल अस्पताल में दो मशीनें हैं लेकिन जिला अस्पताल से एक दिन के लिए डॉक्टर को बुलाना पड़ता है। देपालपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मशीन और डॉक्टर उपलब्ध होने के बावजूद सोनोग्राफी की सेवाएं नहीं मिल रही हैं। अर्बन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बाणगंगा में एक रेडियोलॉजिस्ट हैं और हफ्ते में 2 दिन सेवाएं देते हैं। आलीराजपुर जिले के जोबट सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में सोनोग्राफी नहीं हो रही है। बड़वानी जिले की सेंधवा सिविल अस्पताल में डॉक्टर और मशीन उपलब्ध हैं। लेकिन रजिस्ट्रेशन पेंडिंग होने की चलते सोनोग्राफी नहीं हो पा रही है। धार के जिला अस्पताल में यूएसजी मशीन है लेकिन डॉक्टर उपलब्ध नहीं है। सरदारपुर अस्पताल में अमझेरा पीएससी से डॉक्टर को बुलाना पड़ता है। खरगोन जिले की सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सनावद में मशीन उपलब्ध है लेकिन डॉक्टर न होने के चलते सोनोग्राफी नहीं हो रही है।

ग्वालियर में 2 यूएसजी मशीनें, डॉक्टर छह

ग्वालियर जिला अस्पताल में दो मशीनें हैं और सोनोग्राफी के लिए 6 डॉक्टर उपलब्ध है। इनमें एक रेडियोलॉजिस्ट दो मेडिकल ऑफिसर, चार गाइनेकोलॉजिस्ट उपलब्ध हैं। डॉक्टरों की उपलब्धता के हिसाब से यहां मशीनें कम हैं। गुना जिला अस्पताल में प्राइवेट डॉक्टर से सोनोग्राफी करनी पड़ती हैं। शिवपुरी जिला अस्पताल में तीन मशीनें और सिर्फ एक गाइनेकोलॉजिस्ट ही उपलब्ध है।

भिंड जिले में प्राइवेट सेंटर्स से चल रहा काम

भिंड जिला अस्पताल में प्राइवेट डॉक्टर से सोनोग्राफी के लिए अनुबंध किया है। इसी तरह गोहद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भी प्राइवेट सेंटर से सोनोग्राफी के लिए अनुबंध किया है। मुरैना जिले के अंबाह सिविल अस्पताल में डॉक्टर और मशीन उपलब्ध होने के बावजूद सोनोग्राफी नहीं हो पा रही है क्योंकि डॉक्टर नॉमिनेटेड नहीं है। स्वास्थ्य विभाग की रिपोर्ट के मुताबिक जबलपुर जिला अस्पताल में तीन यूएसजी मशीनें हैं और चार डॉक्टर उपलब्ध हैं। लेकिन, इनमें से भी तीन डॉक्टर एल्गिन अस्पताल में पदस्थ हैं।

बालाजी डेन्टल क्लीनिक का शुभारंभ

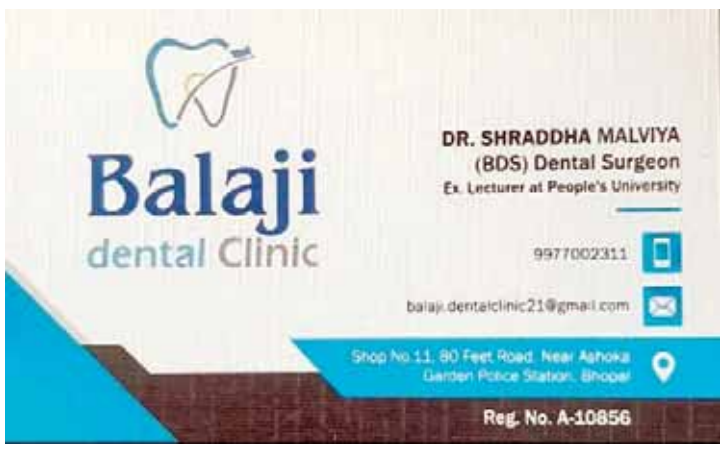

भोपाल। अशोका गार्डन में 80 फिट रेलवे-स्टेशन रोड, थाने के समीप सोमवार को डॉक्टर श्रद्धा मालवीय के बालाजी डेन्टल क्लीनिक का शुभारंभ हुआ। क्लीनिक का शुभारंभ पूजा-पाठ और पूर्ण विधि-विधान के साथ पारिवारिक सदस्यों की मौजूदगी में किया गया। डॉ.श्रद्धा बिटिया को इस महत्वपूर्ण उपलब्धि एवं शुभ अवसर पर सभी स्नेहीजनों और परिजनों ने मंगलमय बधाई देकर उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ दी।

गुना में पुलिया से नीचे गिरा ट्रक, 4 की मौत

4 की हालत गंभीर; कानपुर से कर्नाटक जा रहे थे

गुना (नप्र)। गुना में मिनी ट्रक पलटने से 4 लोगों की मौत हो गई। 4 लोग गंभीर घायल हैं। हादसा सोमवार तड़के 3.30 बजे एबी रोड पर म्याना से आधा किलोमीटर दूर हुआ। म्याना थाना प्रभारी संजीत माबई ने बताया कि मिनी ट्रक में 6 मजदूर, ड्राइवर और क्लीनर थे। शुरुआती तौर पर यह समझ आ रहा है कि शायद ड्राइवर को झपकी आने के कारण हादसा हुआ है। ट्रक डिवाइडर को तोड़ते हुए पुलिया से नीचे गिरा। 3 मजदूरों की मौके पर ही मौत हो गई, एक ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। हादसे में विष्णु (32) पुत्र रामपाल, मीर (30) पुत्र चोखेलाल, विकास (35) और रंजीत (25) पुत्र नत्थू सिंह की मौत हो गई। क्लीनर शाहरुख, ड्राइवर अशोक, नवाब समेत चार गंभीर घायल हैं। इन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। मजदूर उत्तर प्रदेश में कानपुर के बताए जा रहे हैं। ड्राइवर अशोक रायबरेली का रहने वाला है। उसे ग्वालियर रेफर किया गया है।

कालपी से ट्रक में बैठे थे मजदूर, परिवार वाले गुना के लिए रवाना

घायल और मृतक मजदूर कानपुर के रहने वाले हैं। उन्हें कर्नाटक जाना था। ट्रक में उनकी बाइक, खाना बनाने का सामान, कपड़े और दूसरा जरूरी सामान था। हादसे के बाद सारा सामान बिखर गया। मृतकों और घायलों के परिवार वालों को सूचना दे दी गई है। वे लोग गुना के लिए रवाना हो गए हैं। ट्रक ड्राइवर क्लीनर शाहरुख ने बताया, चायबरेली की गाड़ी है। हम फतेहपुर (उत्तर प्रदेश) से शुजालपुर (शाजापुर, मध्यप्रदेश) जा रहे थे। मजदूर कालपी (जालौन, यूपी) से बैठे थे। सो रहे थे, तभी गाड़ी डिवाइडर से भिड़ गई। पुलिस ने हमें अस्पताल पहुंचाया।

बुर्का पहन शादी करने पहुंची हिंदू लड़की

वकीलों ने विरोध कर पुलिस को दी सूचना ; भोपाल से लापता थी रीवा में मिली

रीवा (नप्र)। रीवा में उस वक्त तनाव की स्थिति निर्मित हो गई। जब एक हिंदू लड़की शादी करने के लिए बुर्का पहनकर रीवा कोर्ट पहुंची। भोपाल से लापता हुई लड़की दूसरे धर्म के प्रेमी के साथ शादी करने रीवा कोर्ट पहुंची। लेकिन दोनों के नाम देखने के बाद अधिवक्ताओं ने इसका विरोध किया और पुलिस को सूचना दे दी। कुछ ही देर में इसकी भनक हिंदू संगठनों को भी लग गई। देखते ही देखते हिंदू संगठनों ने इसका विरोध शुरू कर दिया। जानकारी के मुताबिक भोपाल के रहने वाले युवक-युवती का प्यार इस कदर परवाना चढ़ा कि दोनों ने समाज के बंधन और नियमों को तोड़ते हुए शादी करने का फैसला किया।

लेकिन जब शादी के लिए युवती के परिजन राजी नहीं हुए तो दोनों ने भागकर शादी करने का फैसला लिया। पुलिस के मुताबिक युवक मुस्लिम समाज का है और लड़की हिंदू समाज ब्राह्मण परिवार से है। जिस वजह से उसके परिजन शादी के लिए राजी नहीं थे। दोनों शादी के लिए रीवा कोर्ट पहुंचे जहां वे कोर्ट मैरिज के लिए पेपर तैयार करवाने लगे। जब युवक-युवती अपना नाम बताने लगे तो अधिवक्ताओं ने शादी का विरोध करते हुए इस मामले से संबंधित शिकायत सिविल लाइन थाने में कर दी। पुलिस के आने की सूचना पाकर युवक मौका पाकर न्यायालय परिसर से फरार हो गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने युवती को थाने लाकर पूछताछ शुरू की।

भोपाल में 45 डिग्री टेम्प्रेचर, पिघला डामर

40 साल में दूसरी बार ऐसी भीषण गर्मी; आज से आधा होगा ट्रैफिक सिग्नल का समय

भोपाल (नप्र)। नौतपा के तीसरे दिन सोमवार को भी भोपाल में भीषण गर्मी के साथ लू चली। सुबह साढ़े 5 बजे ही पारा 44.8 डिग्री था। 8.30 बजे यह 35.4 डिग्री पर आ गया, जबकि सुबह 11.30 बजे 41.4 डिग्री दर्ज किया गया। इसके बाद गर्मी का असर और तेज हुआ। दोपहर 2.30 बजे तापमान 44.8 डिग्री दर्ज किया गया। सोमवार को भोपाल में यलो अलर्ट जारी किया गया है। इससे पहले बीती रात पारा रिकॉर्ड 32.7 डिग्री पहुंच गया था। यह रात मई की सबसे गर्म रही। अब तक रात का टेम्प्रेचर इतना कभी नहीं पहुंचा। 23 मई को इस सीजन में पहली बार रात का तापमान 31.2ए दर्ज किया गया था।

40 साल में दूसरी बार ऐसी भीषण गर्मी

मौसम विभाग का कहना है कि भोपाल में 40 साल में दूसरी बार ऐसी भीषण गर्मी पड़ रही है। रविवार को लू के थपेड़ों के बीच भोपाल में पारा 45.4 डिग्री तक पहुंच गया था। इससे पहले 2016 में 21 मई को दिन का तापमान 46.7 डिग्री दर्ज किया गया था। मौसम विशेषज्ञ एके शुक्ला के मुताबिक 1983 से लेकर अब तक दो बार ही भोपाल में पारा 45 पार हुआ है। राजगढ़ प्रदेश में सबसे गर्म रहा। तब तापमान 46.8 डिग्री दर्ज किया गया।

मंगलवार से ट्रैफिक सिग्नल का समय बदलेगा: राजधानी भोपाल में गर्मी के कहर को देखते हुए ट्रैफिक सिग्नल पर रेड लाइट होने के दौरान खड़े होने का समय आधा किया जा रहा है। मंगलवार सुबह 11 बजे से शाम को 4 बजे तक 14 प्रमुख चौराहों पर सिग्नल का टाइमिंग आधा कर किया जा रहा है।

आज से इन 14 चौराहों के ट्रैफिक सिग्नल का टाइम हॉफ

रोशनपुरा, लालघाटी, ज्योति टाकीज चौराहा, रेतघाट, भारत माता चौराहा, प्रभात चौराहा, गोविंदपुरा टर्निंग,रंगमहल,भोपाल टाकीज, कोर्ट चौराहा, एमपी नगर थाना चौराहा, बोर्ड ऑफिस चौराहा, व्यापम चौराहा।

भोपाल में वोटों की गिनती करेंगे 912 कर्मचारी

काउंटिंग से जुड़ी बारीकीं बताई; 31 मई को फाइनल ट्रेनिंग मिलेगी

भोपाल (नप्र)। भोपाल लोकसभा सीट पर वोटों की गिनती 4 जून को होगा। इसके साथ ही पुरानी जेल में बने स्ट्रॉन्ग रूम से ईवीएम निकलेगी और फिर भाजपा, कांग्रेस समेत अन्य 22 कैंडिडेट्स की किस्मत का फैसला हो जाएगा। काउंटिंग के लिए कुल 912 कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। इन्हें 31 मई को फाइनल ट्रेनिंग दी जाएगी। मॉडल हायर सेकंडरी स्कूल और अपेक्स बैंक के समन्वय भवन में 25 मई को एक ट्रेनिंग दी जा चुकी है। जिसमें माइक्रो ऑब्जर्वर समेत अन्य कुल 912 कर्मचारियों की ट्रेनिंग हुई। इन्हीं को 31 मई को फिर से ट्रेनिंग मिलेगी। ताकि, काउंटिंग से जुड़ी हर बारीकीं से वे रूबरू हो सके।

सबसे पहले भोपाल उत्तर के वोटों की गिनती

बता दें कि सबसे पहले भोपाल उत्तर और सबसे आखिरी में गोविंदपुरा विधानसभा में डाले गए वोटों की गिनती हो सकेगी। यहां सबसे कम और सबसे ज्यादा राउंड होंगे।

भोपाल उत्तर में 16 राउंड, जबकि गोविंदपुरा में 20 राउंड रहेंगे। नरेला-भोपाल दक्षिण-पश्चिम के 17-17, बैरसिया-मध्य के 18-18, हुजूर के वोटों की 19 राउंड गिनती होगी।

सीहोर के पोस्टल बैलेट की गिनती भोपाल में: भोपाल लोकसभा में आठवीं विधानसभा सीहोर है। जिनके वोटों की गिनती वहीं होगी और डाटा भोपाल भेजा जाएगा। इसके बाद ही राउंडवार आंकड़े सामने आएंगे। हालांकि, सीहोर विस के पोस्टल बैलेट की गिनती भोपाल में ही होगी।

सबसे पहले पोस्टर बैलेट गिने जाएंगे

- काउंटिंग में लगे अधिकारी-कर्मचारी सुबह 6 बजे पुरानी जेल पहुंच जाएंगे। 8 बजे आरओ की टेबल पर पहले पोस्टल बैलेट की गिनती शुरू होगी।
- ऑब्जवर गिनती पर नजर रखेंगे। वे हर रिपोर्ट में काउंटिंग से जुड़ी हर बात का उल्लेख करेंगे।
- ईवीएम के अलावा हर पोस्टल बैलेट के लिए 9 टेबल लगाई जाएंगी।
- सबसे पहला राउंड 9 बजे तक पूरा हो सकता है। उसके बाद हर आधे घंटे में एक राउंड होगा। शाम 6 बजे तक स्थिति साफ हो जाएगी।
- काउंटिंग के लिए निर्धारित समय से 30 मिनट के बाद यानी, सुबह 8.30 बजे से ईवीएम से वोटों की गिनती शुरू हो जाएगी।